Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ ओ३म् ❀

दादू भजन संगीतामृत

इस पुस्तक में दादू दयाल के चुने हुए भजनों की मधुर तथा रसीली धुनों को स्वर-लिपियों द्वारा दिया गया है जिनसे प्रत्येक संगीत प्रेमी बिना किसी की सहायता के इन तर्जों को एकतारे, दोतारे, चौतारे तथा हारमोनियम पर गा बजाकर आनंद उठा सकता है।

❀❀❀

स्वर-लिपीकार

राम अवतार "वीर" सङ्गीताचार्य

हिन्द पुस्तक भण्डार

पुस्तक भण्डार का नया नाम

इस पुस्तक के प्रकाशक का नया पता

हिन्द पुस्तक भण्डार

150

जुगल किशोर भीमसेन बुकसेलर पल्टन बाजार, देहर

(निटक कोतवाली)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक
देहाती पुस्तक भंडार
चावड़ी बाजार

राष्ट्रीय हारमोनियम गाइड

लेखक—राम अवतार "वीर" संगीताचार्य

इस पुस्तक में जन मन गण, वन्दे मातरम्, पताका गीत तथा अन्य राष्ट्रीय उत्थान सम्बन्धी उत्तमोत्तम गीतों को मधुर धुनों में स्वरलिपियों द्वारा इस ढङ्ग से लिखा गया है कि प्रत्येक संगीत प्रेमी थोड़े परिश्रम से ही उन गीतों की तर्जों को भली भांति हारमोनियम पर गाने बजाने लग पड़ता है। राम अवतार "वीर" जी की यह पुस्तक पाठशालाओं, राष्ट्रीय सभाओं तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं के लिये अति लाभदायक सिद्ध हुई है। मू० २॥) ढाई रुपया।

पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६

मुद्रक—
यादव प्रिंटिंग प्रेस,
बाजार सीताराम, दिल्ली।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो शब्द

भक्ति-काल में जहां सूर, तुलसी, मीरा, कबीर तथा गुरु नानक देव जी ने अपनी सुन्दर रचनाओं द्वारा युद्ध से भयभीत जनता को शांति का अमृत पान कराया वहाँ दादू दयाल, बुल्लेशाह, रैदास, मलूकदास, चरणदास, परमानन्ददास, नन्ददास, ताज, दरियासाहब, यारी साहब, नारायण स्वामी, नजीर, हरिदास, खालिस, मसूर, व्यास जी, खुसरो, रहीम, तथा रसखानि आदि कवियों ने मिल जुल कर देश में शांति फैलाने का यत्न किया। इन कवियों में पिछड़ी जातियों के तथा मुस्लिम जाति के सूफी कवि भी सम्मिलित थे।

उपरोक्त कवियों की कविताओं में जीवन उत्थान, वैराग्य, प्रभु-भक्ति तथा पोप लीलाओं का खंडन दिखाई देता है। जैसे :—

१. राम रस मीठा रे (दादू)

२. मेरा मेरा छोड़ गंवारा (दादू)

३. अब तो जाग मुसाफिर प्यारे (बुल्लेशाह)

४. ना वह रीझै जप तप कीन्हें (मलूक दास)

५. राम मैं पूजा कहां चढ़ाऊँ (रैदास)

६. नाम बिन भाव करम नहिं छूटे (दरिया साहब)

७. जोगी जुगत जोग कमाव (यारी साहब)

८. है बहारे बाग दुनियां चंद रोज (नजीर)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

९. अगर है शौक मिलने का (मंसूर)
१०. हरी बिन को अपनो संसार (व्यास जी)
११. कमल दल नैनन की उनमानि (रहीम)
१२. मैं ब्रह्म ढूँढयो पुरानन गानन (रसखानि)

यह कवितायें भावपूर्ण, भक्ति-रस से ओत-प्रोत होने के साथ-साथ गायन योग्य भी हैं। भाषा की दृष्टि से, कुछ कवितायें उर्दू भाषा में हैं तथा अन्य कविताओं में ब्रज, राजस्थानी, मारवाड़ी तथा गुजराती भाषाओं का मिश्रण दिखाई देता है। यह भजन ईश्वर भक्तों, उपासकों के लिये एक अमूल्य निधि हैं।

इस पुस्तक में इनकी कविताओं में से चुने हुए भजन जनता के लाभार्थ स्वर-लिपियों सहित दिये गये हैं। भजनों की स्वर-लिपियाँ तथा उनके चिन्ह अति सरल हैं। भजनों की धुनें भी मनोरंजक व लोकप्रिय हैं। इन स्वर-लिपियों द्वारा साधारण से साधारण व्यक्ति भी स्वयं ही हारमोनियम पर इन मधुर भजनों की धुनों को गा बजा सकता है।

आशा है कि जनता इस पुस्तक से अवश्य लाभ उठायेगी और मुझे उत्साहित करेगी।

राम अवतार

तिथि:—१-१-५८ ८८/B नया बाजार, दिल्ली।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ
भक्ति-काल के विविध कवि	...	६
एकतारा	...	११
एकतारे के अंग	...	११
कद्दू	...	१२
खाल	...	१२
बांस की पोरी	...	१२
स्वर-धरी	...	१२
कीलि	...	१२
खुंटी	...	१३
तारें	...	१४
दोतारा	...	१३
एकतारा बजाने का ढंग	...	१३
करताल	...	१४
ताल तीन	...	१५
एकताल	...	१५
झपताल	...	१६
कहरवा ताल	...	१७
दादरा ताल	...	१७

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय		पृष्ठ
संगीत सम्बन्धी आवश्यक बातें	...	१८
संगीत	...	१८
स्वर	...	१९
शुद्ध स्वर	...	१९
कोमल स्वर	...	१९
तीव्र स्वर	...	१९
सप्तक के बारह स्वर	...	२०
ठाठ	...	२०
दस ठाठों का व्यौरा	...	२१
राग	...	२१
वादी स्वर	...	२२
संवादी स्वर	...	२२
आरोह	...	२३
अवरोह	...	२३
स्थाई	...	२३
अन्तरा	...	२३
गीतों के साथ ताल सम्बन्ध	...	२३
गीतों के साथ लय सम्बन्ध	...	२४
हारमोनियम	...	२४
सादा हारमोनियम	...	२५
हारमोनियम पर सप्तक	...	२५

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय		पृष्ठ
बाजे के स्वरों का नकशा	...	२६
हारमोनियम पर उंगलियों का चलन	...	२७
हारमोनियम पर उंगलियां चलाने की विधि	...	२७
उंगलियां चलाने का नकशा	...	२८
स्वर-लिपियों के चिन्ह	...	२९
आवो प्यारे मीत हमारे	...	३३
राम रस मीठा रे	...	३५
सोई सुहागन सांच सिंगार	...	३७
माटी खुदी करेंदी यार	...	३९
अब तो जाग मुसाफिर प्यारे	...	४१
कद मिलसी मैं बिरहों सताई नूँ	...	४३
राम मैं पूजा कहा चढ़ाऊँ	...	४४
गाई गाई अब का कहि गाऊँ	...	४६
न वह रीझै जप तप कीने	...	४८
वह पुरुषोत्तम मेरा यार	...	५०
जसोदा तेरे भाग की कही न जाय	...	५२
कौन रसिक है इन बातन में	...	५४
राम कृष्ण कहिये उठ भोर	...	५६
छैल जो छबीला सब रंग में रंगीला	...	५८
दुनियां भरम भूल बौराई	...	६०
नाम बिन भाव करम नहिं छूटे	...	६२

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय		पृष्ठ
आदि अन्त मेरा है राम	...	६४
बाबुल कैसे बिसरा जाई	...	६६
जोगी जुगति कमान	...	६८
झिलमिल झिलमिल बरसे नूरा	...	६९
बिरहिनी मंदिर दिया न बार	...	७१
नयनों रे चितचोर बतावो	...	७२
टेर सुनो ब्रजराज दुलारे	...	७४
है बहारे बाग दुनियाँ चन्द रोज़	...	७६
हरि को ऐसो ही सब खेल	...	७८
जिन्हों घर झूमते हाथी	...	८०
तुम नाम जपन क्यों छोड़ दिया	...	८१
अगर है शौक मिलने का	...	८२
हरि बिनु को अपना संसार	...	८५
जैये कौन के अब द्वार	...	८७
बहुत रही बाबुल घर	...	८९
कमल दल नैनन को उनमानि	...	९०
छबि आवन मोहन लाल की	...	९२
ब्रह्म मैं ढूंढयो पुरानन गानन	...	९४
मानुष हौं तो वही रसखानि	...	९५

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भक्ति-काल के विविध कवि

भक्ति काल में जिन कवियों ने युद्ध से भयभीत जनता को सुख और शांति का अमृत पान कराने का यत्न किया, उनमें हिन्दू तथा मुसलमान दोनों जातियों के कवि सम्मिलित थे। मुसलमान कवि जिन्हें सूफी सम्प्रदाय के कवि कहा जाता था उन्होंने भी हिन्दी में सुन्दर तथा उत्तमोत्तम कवितायें रचकर कृष्ण लीला, राम भक्ति तथा राग वैराग की भावना को प्रगट किया है उनमें से बुल्लेशाह, ताज, दरिया साहब, यारी साहब नजीर, मन्सूर, खुसरो, रहीम तथा रसखानि आदि कवि सुप्रसिद्ध हैं।

हिन्दू कवियों में से, सूर, तुलसी, मीरा, कबीर आदि को छोड़ कर अन्य जिन कवियों की रचनाएँ इस पुस्तक में दी गई हैं वह हैं दादू, परमानन्ददास, मलूकदास, चरणदास, नन्ददास, हरिदास, नारायण स्वामी और व्यास जी हैं।

उपरोक्त कवि किस जाति, धर्म, समाज तथा सम्प्रदाय से सम्बन्धित थे। इस पर विचार करने की आवश्यकता नहीं। भावना की दृष्टि से सब कवियों के भाव एक जैसे ही प्रतीत होते हैं और सब का लक्ष्य देशवासियों में प्रेम, प्यार, एकता को बढ़ाना और पाखंडों तथा अन्ध विश्वासों को त्यागना था। शैली तथा भाषा की दृष्टि से भी उनकी कविताओं में अधिक अन्तर नहीं है। थोड़े से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुसलमान कवियों ने उर्दू भाषा का प्रयोग अधिक किया है। यह सब कवितायें मनुष्य के जीवन को बनाने, देश में एकता पैदा करने तथा प्रभु भक्ति में लीन होने के साधन हैं।

उपरोक्त कवियों के जीवन के विषय में कुछ परिचय देना पुस्तक के बढ़ जाने के कारण किसी अन्य समय के लिए छोड़ दिया है।

इस पुस्तक में केवल उनकी रचनाओं में से कुछ चुनी हुई रचनाएँ जनता के लाभार्थ दी हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकतारा

साधु, संतों व भक्तजनों को मधुर भजन गाते समय एकतारा ही अधिक प्रिय लगता है। यह वाद्य कम मूल्य वाला होने के कारण निर्धन से निर्धन व्यक्ति भी इसे ले सकता है। यदि तानपुरे का जिसे चौतारा भी कहते हैं प्रथम रूप देखा जाय तो एकतारा ही हो सकता है। एकतारा वाद्य बांस की पोली, सूखा हुआ कद्दू, थोड़ी सी खाल और एक कीलि से ही बना हुआ होता है। इस वाद्य को उठाने, ले जाने तथा बजाने में कोई कठिनाई नहीं होती। भक्त-वाणी के लिए यह वाद्य सर्वोत्तम है।

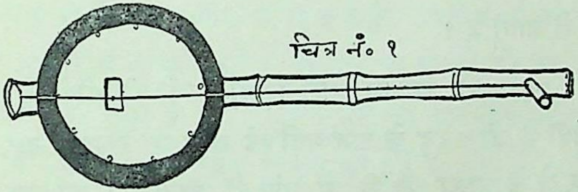

चित्र नं० १

एकतारे के अङ्ग

1–कद्दू
2–खाल
3–बांस की पोली
4–स्वर-धरी
5–कीलि
6–खुंटी
7–तार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

1. **कद्दू**–तुंबे के प्रकार का और छोटे आकार का होता है। इसकी काट ऊपर से की जाती है। मूल ध्वनि का कारण यह कद्दू होता है।

2. **खाल**–कद्दू के ऊपर वाले कटे हुए भाग पर बकरे की खाल मढ़ी रहती है। इस खाल को कद्दू के ऊपर खेंचकर डोरा तथा पीतल की कीलों द्वारा जड़ दिया जाता है। यह खिंची हुई खाल तबली की भांति तार के खिचाव द्वारा ध्वनि उत्पन्न करने में सहायक होती है।

3. **बांस की पोली**–बाँस की पोली जिसे यदि डांड़ कहा जाये तो अनुचित न होगा। यह बांस की पोली कद्दू के अन्दर छेद करके एक ओर से कद्दू के साथ बांस की कीलों द्वारा जोड़ दी जाती है और दूसरी ओर तार खेंचने के लिये एक खुंटी के साथ लगा दी जाती है।

4. **स्वर-धरी**–स्वर-धरी बांस की या लकड़ी की घोड़ी-सी बनी हुई होती है जो कद्दू के ऊपर मढ़ी हुई खाल पर रखकर तार उस के ऊपर से ले जाकर खुंटी से बांध दी जाती है। यह स्वर-धरी खड़े रूप में खाल के ऊपर रखी जाती है।

5. **कीलि**–तार के एक सिरे को बांधने के लिये तानपुरे या सितार आदि की भांति इसमें अलग कीलि नहीं लगाई जाती। केवल नीचे की ओर कद्दू से निकले हुए बांस के सिरे में एक टक देकर तार का एक सिरा बाँध दिया जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

6. खुंटी—तार खेंचने के लिए एक लकड़ी की खुंटी बांस के ऊपर वाले सिरे पर सामने की ओर बांस में छेद करके अटका दी जाती है। बजने वाला तार इसी खुंटी के साथ खेंचने के लिये बंधा रहता है।

7. तार—एकतारा पर केवल एक तार फौलाद का लगाया जाता है। तार की मोटाई डांड़ की लम्बाई के आधार पर बारीक या मोटी होती है।

दोतारा

एकतारे की भांति दोतारे का प्रयोग भी किया जाता है। दोतारे की बनावट एकतारे की भांति ही होती है। केवल एक तार के स्थान पर दो तारें लगाई जाती हैं। इन दोनों तारों को ऊपर से नीचे एक ही सीध में लगाया जाता है ताकि उंगली की ठोकर दोनों तारों को एक साथ लगती रहें। एकतारे या दोतारे को षड़ज पर ही स्वर किया जाता है। कई गायक ऊपर का तार मध्य षड़ज पर और नीचे के तार मन्द्र षड़ज पर स्वर करते हैं।

एकतारा या दोतारा बजाने का ढंग भी एक जैसा ही होता है।

एकतारा बजाने का ढङ्ग

एकतारा या दोतारा को दाएँ हाथ में प्रायः पकड़ा जाता है और पकड़ने का स्थान डांड़ अर्थात् बांस है, की लम्बाई के मध्य से जरा नीचे होता है। डांड़ पकड़ते समय प्रथम उँगली खड़ी रखनी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चाहिए क्योंकि प्रथम उँगली से ही ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर तारों को छेड़ा जाता है। एकतारा बजाने वाले प्रायः दाएँ हाथ

चित्र नं० २

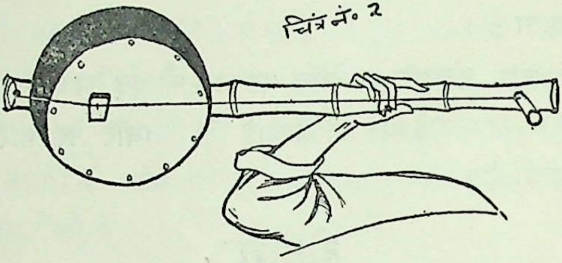

में एकतारा और बाएँ हाथ में करताल या मंजीरे थामकर बजाते रहते हैं। एकतारे की तारें आस का काम देती हैं और करताल तथा मंजीरे गायन को ताल-बद्ध रखते हैं।

करताल

करतालें दो प्रकार की बनी हुई होती हैं। जैसे :—गोल तथा चौड़ी। करतालों के अन्दर उनमें झंकार उत्पन्न करने के लिए कांसी या पीतल की पत्ती के गोल छल्ले लगे रहते हैं। जब करताल के

चित्र नं० ३

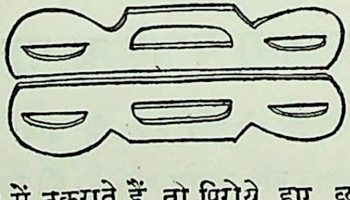

दोनों मुख आपस में टकराते हैं तो पिरोये हुए छल्ले आपस में टकराकर बजने लगते हैं। करतालों को समयबद्ध तालानुसार ताल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की ताली खाली के आधार पर बजाया जाता है। भक्ति-रस की कविताओं में तीन ताल, कहरवा ताल तथा दादरा ताल अधिक चलता है, इसलिए इन्हीं तालों के आधार पर करतालों को बजाया जाता है। करताल की ठोकर प्राय ताल के खडों के आधार पर दी जाती है और कभी-कभी करतालों को दुगन में भी बजाया जाता है। आवश्यक तालों का व्यौरा जनता के ज्ञानार्थ आगे दिया जाता है।

ताल तीन

तीन ताल 16 मात्राओं का होता है। इसके 4-4 मात्राओं के 4 खंड होते हैं। इसमें 3 तालियां और 1 खाली के स्थान होते हैं। इसकी 1, 5 तथा 13वीं मात्रा पर ताली और 9वीं मात्रा पर खाली है। इस ताल के ठेके के बोल आगे दिये जाते हैं :—

ठेके के बोल

×				2				०				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा

एकताल

एकताल में 12 मात्रा होती हैं और 2-2 मात्रा के 6 खंड होते हैं। इसमें 4 तालियां तथा 2 खाली के स्थान होते हैं। इसमें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

1, 5, 9 तथा 11 मात्रा पर ताली और 3 तथा 7वीं मात्रा पर खाली है। तबले के बोल इस प्रकार हैं :—

ठेके के बोल

×		०		2		०		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धिं	धिं	धागे	तिरकट	तू	न	क	त्ता	धागे	तिरकट	धिं	ना

झपताल

झपताल 10 मात्राओं का होता है। इसमें 3 तालियां तथा 1 खाली के स्थान हैं। इसकी 1, 3 तथा 8वीं मात्रा पर ताली और 6वीं मात्रा पर खाली है। इसके ठेके के बोल आगे दिये जाते हैं :—

ठेके के बोल

×		2			०		3		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धिं	ना	धिं	धिं	ना	तिं	ना	धिं	धिं	ना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहरवा ताल

ताल कहरवा 8 मात्रा का होता है और इसमें 1 ताली और 1 खाली का स्थान होता है। इसकी पहली मात्रा पर ताली और 5वीं मात्रा पर खाली है। कहरवा ताल 4 मात्रा का भी अधिक प्रचलित है। इसमें केवल ताली ही रहती है। दोनों प्रकार के ठेके के बोल आगे दिये जाते हैं :—

ठेके के बोल

मात्रा 8 (पहला प्रकार)

×				०			
1	2	3	4	5	6	7	8
धा	गे	ना	धि	ता	के	धिं	ना

ठेके के बोल

मात्रा 4 (दूसरा प्रकार)

×			
1	2	3	4
धिं	धा	तीं	ना

दादरा ताल

दादरा ताल 6 मात्राओं का होता है और इसमें 1 ताली तथा 1 खाली का स्थान रहता है। इसकी पहली मात्रा पर ताली तथा चौथी मात्रा पर खाली है। इसके ठेके के बोल इस प्रकार हैं :—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ठेके के बोल

×			०		
1	2	3	4	5	6
धा	धि	ना	धि	तिं	ना

संगीत सम्बन्धी आवश्यक बातें

भजनों की तर्जों को स्वर-लिपियों द्वारा निकालने तथा कंठस्थ करने में संगीत सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करना अति आवश्यक है। जिससे प्रत्येक स्वर तथा तर्ज निकालने में सुविधा होती है। यदि केवल स्वर कंठस्थ करने से या बिना किसी उस्ताद की मदद के स्वर अभ्यास या स्वर-लिपियों द्वारा तर्ज निकालने में कोई कठिनाई हो तो हारमोनियम का आश्रय प्रारम्भ में लिया जा सकता है और हारमोनियम पर इन तर्जों को बजा कर कंठस्थ किया जा सकता है। संगीत सम्बन्धी आवश्यक बातों की जानकारी के साथ-साथ हारमोनियम बजाने तथा उस पर तर्जें निकालने की विधि भी सरल ढंग से दी गई है।

संगीत

गायन, वादन तथा नृत्यन इन तीनों कलाओं के समावेश को संगीत कहते हैं। संगीत की उत्पत्ति नाद से मानी गई है। नाद से श्रुति, श्रुति से स्वर, स्वर से सप्तक, सप्तक से ठाठ और ठाठों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से रागों की उत्पत्ति होती है। आजकल श्रुति गायन अप्रचलित है और स्वरों द्वारा ही सर्व प्रकार का गायन होता है।

स्वर

संगीत में मूल स्वर सात माने गये हैं। जैसे--स रे ग म प ध नी। इन स्वरों के तीन रूप होते हैं। जैसे--शुद्ध, कोमल तथा तीव्र।

शुद्ध स्वर—जिन स्वरों का चलन श्रुतियों के आधार पर हो और जिनकी ध्वनि साधारण रूप से चढ़े और उतरे उन्हें शुद्ध स्वर कहते हैं। जैसे--स रे ग म प ध नी।

कोमल स्वर—जिन स्वरों को ध्वनि शुद्ध स्वरों की ध्वनि से हल्की तथा उतरी हुई होती है उन्हें कोमल स्वर कहते हैं। यह स्वर संख्या में चार होते हैं। जैसे—रे ग ध नी।

तीव्र स्वर—जिस स्वर की ध्वनि शुद्ध स्वर से चढ़ी हुई होतो है उसे तीव्र स्वर कहते हैं। जैसे--म॑।

सप्तक

सात स्वरों के समूह को सप्तक कहते हैं और मनुष्य की कंठ ध्वनि की शक्ति अनुसार तीन सप्तक माने गये हैं। सप्तक में सात शुद्ध, चार कोमल और एक तीव्र कुल बारह स्वर हाते हैं जिनमें से स और प इन दो स्वरों का रूप एक ही रहता है अर्थात् यह स्वर कामल या तीव्र नहीं बनते। इन्हें अचल स्वर कहते हैं और अन्य पांच स्वर रे ग ध नी कोमल और म॑ तीव्र रूप भी धारण करते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कंठ शक्ति अनुसार मध्य सप्तक की ध्वनि साधारण, मन्द्र सप्तक की ध्वनि हल्की तथा तार सप्तक की ध्वनि अधिक ऊँची होती है। स्वर-लिपि में सप्तकों के चिन्ह दिये गये हैं। स्वर-लिपि के चिन्हों का विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में दिया गया है।

सप्तक के बारह स्वर

1. षड़ज	--	स	अचल
2. ऋषभ	--	रे	कोमल
3. ऋषभ	--	रे	शुद्ध
4. गंधार	--	ग	कोमल
5. गंधार	--	ग	शुद्ध
6. मध्यम	--	म	शुद्ध
7. मध्यम	--	मं	तीव्र
8. पंचम	--	प	अचल
9. धैवत	--	ध	कोमल
10. धैवत	--	ध	शुद्ध
11. नीशाद	--	नी	कोमल
12. नीशाद	--	नी	शुद्ध

ठाठ

सप्तक में लगने वाले शुद्ध, कोमल तथा तीव्र आदि बारह स्वरों में से किन्हीं सात स्वरों के समूह को ठाठ कहते हैं। सर्व प्रकार के रागों की उत्पत्ति ठाठों से मानी जाती है और हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में केवल आठ ठाठ प्रचलित हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दस ठाठों का ब्योरा

1. बिलावल	--	स	रे	ग	म	प	ध	नी
2. कल्याण	--	स	रे	ग	म॑	प	ध	नी
3. खमाज	—	स	रे	ग	म	प	ध	नी॒
4. भैरव	--	स	रे॒	ग	म	प	ध॒	नी
5. काफ़ी	--	स	रे	ग॒	म	प	ध	नी॒
6. आसावरी	--	स	रे	ग॒	म	प	ध॒	नी
7. भैरवी	--	स	रे॒	ग	म	प	ध॒	नी॒
8. मारवा	--	स	रे॒	ग	म॑	प	ध	नी
9. तोड़ी	--	स	रे॒	ग॒	म॑	प	ध	नी
10. पूर्वी	—	स	रे॒	ग	म॑	प	ध	नी

प्रत्येक ठाठ में स्वर एक दूसरे से विभिन्न होते हैं और प्रत्येक ठाठ से कई रागों की उत्पत्ति होती है।

राग

शास्त्रिय नियमानुसार स्वरों को मधुर तथा रसीली धुनों में उच्चारण करने तथा गाने बजाने को राग कहते हैं। राग में स्वर वादी-संवादी स्वर, आरोह-अवरोह और पकड़ का होना अति आवश्यक है। स्वरों के आधार पर पांच, छः तथा सात स्वरों वाले राग प्रचलित हैं। पांच स्वरों से कम वाले राग आजकल अप्रचलित

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माने जाते हैं। स्वर संख्या के आधार पर रागों की नौ जातियां मानी जाती हैं। इन जातियों को राग का वर्ग भी कहते हैं।

(i) संपूर्ण जाति—सात स्वरों वाले राग।

(ii) शाड़व जाति—छः स्वरों वाले राग।

(iii) औड़व जाति—पांच स्वरों वाले राग।

(iv) संपूर्ण शाड़व जाति—आरोह में सात और अवरोह में छः स्वर लगने वाले राग।

(v) संपूर्ण औड़व जाति—आरोह में सात और अवरोह में पांच स्वर लगने वाले राग।

(vi) शाड़व संपूर्ण जाति—आरोह में छः और अवरोह में सात स्वर लगने वाले राग।

(vii) औड़व-शाड़व जाति—आरोह में छः और अवरोह में पांच स्वर लगने वाले राग।

(xiii) औड़व सम्पूर्ण जाति—आरोह में पांच और अवरोह में सात स्वर लगने वाले राग।

(ix) औड़व-शाड़व जाति—आरोह में पांच और अवरोह में छः स्वर लगने वाले राग।

वादी स्वर—प्रत्येक राग में एक स्वर ऐसा होता है जो अन्य स्वरों का अपेक्षा अधिक लगाया जाता है उसे राग का राजा स्वर या वादी स्वर कहते हैं।

संवादी स्वर—प्रत्येक राग में वादी स्वर की सहायता के लिये एक स्वर निश्चित होता है जिसे राग का मंत्री स्वर या राग संवादी स्वर कहते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरोह--जब हम स्वरों को उच्चारण करते हुए नीचे से ऊपर की ओर जाते हैं जैसे--स रे ग म प ध नी तो उसे आरोह या आरोही कहेंगे।

अवरोह—जब हम स्वरों का उच्चारण ऊपर से नीचे की ओर करते हैं जैसे--नी ध प म ग रे स तो उसे अवरोह या अवरोही कहेंगे।

स्थाई तथा अन्तरा

स्थाई--किसी गीत या भजन की पहली कली जो बार-बार दोहराई जाती है उसे स्थाई कहते हैं।

अंतरा--स्थाई गाने के पश्चात् जब दूसरी कलियों का उठान तार सप्तक के स्वरों में करते हुए लौटते हैं तो उस सारे भाग को अंतरा कहते हैं।

भजनों तथा गीतों में स्थाई और अन्तरा ऐसे दो ही भाग होते हैं। अन्तरों का उठान कई बार विभिन्न रूपों से भी किया जाता है जिससे गीत तथा भजन गायन में एक अनोखी सुन्दरता आ जाती है।

गीतों के साथ ताल-सम्बन्ध

गीत तथा भजनों को गाते समय लय और ताल का भी विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए क्योंकि लय और ताल के बिना गायन, वादन तथा नृत्यन अधूरे तथा रूखे प्रतीत होते हैं। ताल की चाल गीत का चलन अति सुन्दर लगता है। तालों की बनावट मात्राओं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के हिसाब से होती है और प्रत्येक ताल में विभिन्न मात्राएँ होती हैं। गीत की कली की मात्राओं के आधार पर ताल निश्चित की जाती है अर्थात् ताल में भी उतनी ही मात्राएँ होनी चाहिए जितनी कि गीत की प्रथम कली में। तर्ज की चाल के आधार पर भी तालों का चुनाव किया जाता है। प्रारम्भ से ही ताल के साथ गाना चाहिए।

गीतों के साथ लय-सम्बन्ध

लय का अर्थ है रफ्तार अर्थात् गीत तथा भजनों को गाते बजाते समय उसकी रफ्तार का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए क्योंकि लय में गाने से ही गीत तालबद्ध होते हैं अन्यथा ताल से बिखर जाते हैं। संगीत में लय तीन प्रकार की मानी गई है जैसे—मध्य, विलम्बित तथा द्रुत।

(1) मध्य लय साधारण रफ्तार को कहते हैं।

(2) विलम्बित लय धीमी तथा ठहरी हुई रफ्तार को कहते हैं।

(3) द्रुत लय तेज रफ्तार को कहते हैं।

लय में गाते बजाते समय गीतों तथा भजनों की लय को बार बार घटाना या बढ़ाना नहीं चाहिये। पूरा गायन एक ही लय में समाप्त करना चाहिये।

हारमोनियम

हारमोनियम पर काले और सफेद 37 या 39 परदे होते हैं। इन परदों को चाबियां भी कहते हैं। परदों पर स्वर-स्थान आगे के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सादा हारमोनियम

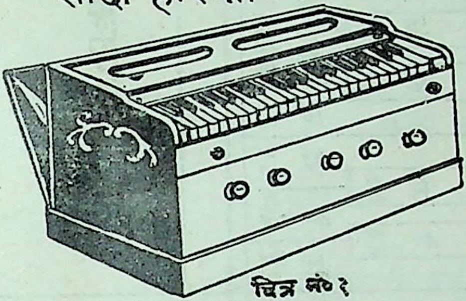

चित्र नं० १

चित्र में दिये गये हैं। चित्र को देखकर हारमोनियम के सर्व प्रकार के स्वरों का ज्ञान प्राप्त करें।

हारमोनियम पर सप्तक—आगे के चित्र में स्वरों के साथ-साथ सप्तक भी दिखाये गये हैं। परन्तु प्रत्येक गायक अपनी कंठ ध्वनि के अनुसार जिस स्वर को षड़ज मान लें उस स्वर से पीछे के सब स्वर मन्द्र सप्तक के कहलायेंगे। माने हुए षड़ज से लेकर आरोह करते हुए नी स्वर तक सब स्वर मध्य सप्तक के कहलायेंगे और इसके आगे के सब स्वर तार सप्तक के होंगे। गायक अपनी इच्छानुसार हारमोनियम के किसी परदे को स मान सकता है और वहां से सप्तकों की स्थापना कर सकता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

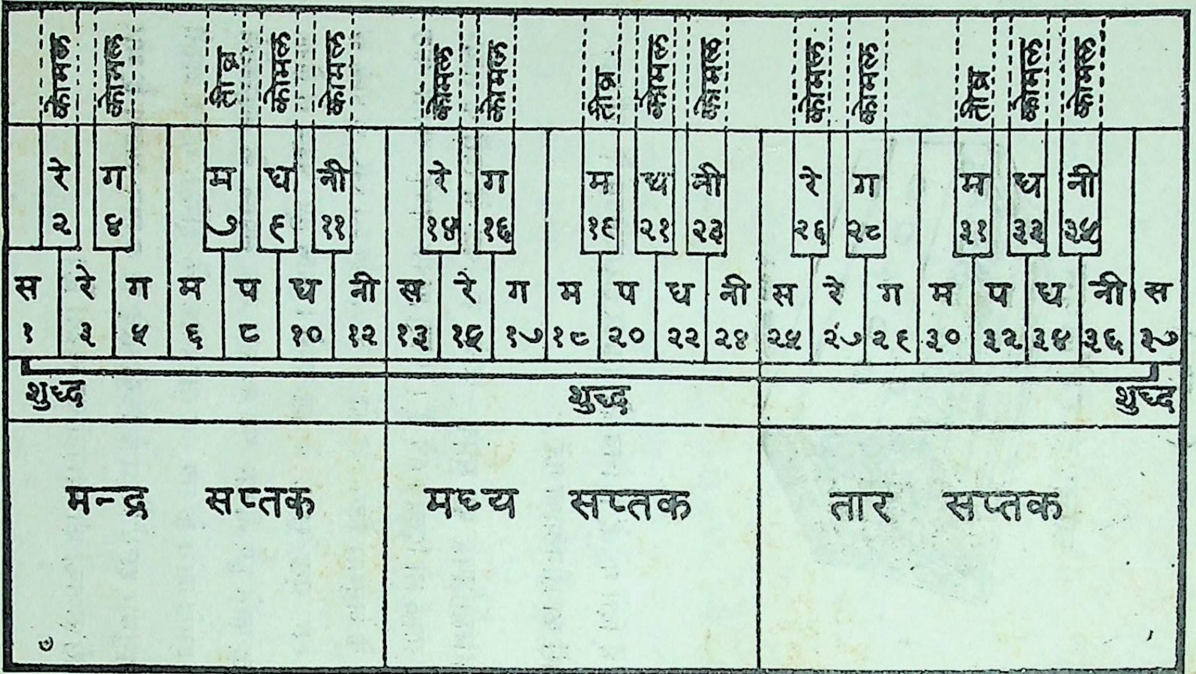

बाजे के स्वरों व सप्तकों का नकशा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हारमोनियम पर उँगलियों का चलन

हारमोनियम के परदों पर उँगलियां इस तरह चलानी चाहिए कि उँगलियों के चलन में किसी प्रकार की रुकावट न हो और उँगलियाँ भी भली प्रकार से इधर उधर घूमती रहें। उँगलियों के ऊपर से

हारमोनियम पर उगलियाँ चलाने की विधि

उँगली होकर न जाएँ और काले परदों पर अंगूठे नहीं लगने चाहिए। स्वर नं० एक पर अंगूठा, स्वर नं० दो पर पहली उंगली, स्वर नं० तीन पर दूसरी उंगली स्वर, नं० चार पर तीसरी उंगली,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वर नं० पाँच पर फिर अंगूठा। पाँचवें स्वर पर अंगूठे को लाते समय अंगूठे को उंगलियों के नीचे से लाना चाहिये। स्वर नं० छः पर पहली उंगली, स्वर नं० सात पर दूसरी उंगली और स्वर नं० आठ पर तीसरी उंगली। इसी तरह क्रमानुसार उंगलियों को चलाना चाहिये।

काले परदों को बजाते समय उंगली नं० एक, दो, तीन ही को प्रयोग में लाना चाहिए और अंगूठे को नीचे सफेद परदों पर ही चलाना चाहिए।

उंगलियां चलाने का नकशा

स्वर का नाम	उङ्गलियों का चलन
स	अंगूठा
रे	पहली उङ्गली
ग	दूसरी उङ्गली
म	तीसरी उङ्गली
प	अंगूठा
ध	पहली उङ्गली
	दूसरी उङ्गली
सं तार सप्तक	तीसरी उङ्गली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वर लिपियों के चिन्ह

1. शुद्ध स्वर बिना किसी चिन्ह के होंगे। जैसे--

स रे ग म प ध नी।

2. कोमल स्वर के नीचे रेखा होगी। जैसे--

रे॒ ग॒ ध॒ नी॒।

3. तीव्र स्वर के ऊपर खड़ी रेखा होगी।

जैसे--मं

4. मध्य सप्तक के स्वरों पर सप्तक का कोई चिन्ह नहीं होगा।

जैसे--स रे॒ रे ग ग म मं प ध॒ ध नी॒ नी।

5. मन्द्र सप्तक के स्वरों के नीचे बिन्दु होगा। जैसे--

स़ रे़ ग़ म़ प़ ध़ नी़।

6. तार सप्तक के स्वरों के ऊपर बिन्दु होगा। जैसे--

सं रें गं मं पं धं नीं।

7. सम--×

8. ताली--1 2 3

9. खाली--०

10. दो स्वर एक मात्रा में--गम पध धनी है।

11. विश्राम का चिन्ह स्वरों तथा बोलों के आगे। जैसे--

स — रे —

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० १

मेरा मेरा छोड़ गंवारा,
सिर पर तेरे सिरजन हारा ।
अपने जीव विचारत नाहीं,
क्या ले गइला बंस तुम्हारा ।।

तब मेरा कत करता नाहीं,
आवत है हंकारा ।
काल-चक्रसूँ खरी परी रे,
बिसर गया घर-बारा ।।

जाइ तहाँ का संयम कीजै,
बिकट पंथ गिरधारा ।
दादू रे तन अपना नाहीं,
तो कैसे भयो संसारा ।।

(दादू दयाल)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल कहरवा

स्थाई

×	×	×	×
प — स —	स — नी ध	नी — रे रे	नी रे ग म
मे — रो —	मे — रों —	छो — ड़ गं	वां — रा —
ग ग रे स	रे स नी —	नी रे ग रे	स — स —
सि र प र	ते — रें —	सिं र ज न	हा — रा —
प प प प	प — ध प	म ग म प	म — — म
सि र प र	ते — रे —	सि र ज न	हा — — रा
ग ग रे स	रे स नी —	नी ग रे	स — स —
सि र प र	ते — रें —	सिं र ज न	हा — रा —

अन्तरा

प प प —	प — म ग	म -- प म	ग रे स --
अ प ने —	जी -- व वि	चा -- र त	ना -- हीं --
स — स --	रे स नी —	नी -- रे रे	नी रे ग म
क्या — ले —	ग ई लां —	बं -- स तु	म्हा -- रा --
ग ग रे स	रे स नी --	नी रे ग रे	स -- स --
सि र प र	ते -- रें —	सिं र ज न	हा -- रा --

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० २

ब्रिरहिण कौं सिंगार न भावै,
है कोई ऐसा राम मिलावैं।
बिसरे अंजन - मंजन चीरा,
विरह - विथा यह व्यापै पीरा ॥
नौसत थाके सकल सिंगारा,
है कोई पीड़ मिटावन हारा ॥
देह - गेह नहीं सुद्धि सरीरा,
निसदिन चितवत चातक नीरा ॥
दादू ताहि न भावत आना,
राम बिना भई मृतक समाना ॥

(दादू दयाल)

ताल कहरवा

स्थाई

×	×	×	×
स ऩी स स	रे — रे —	र ग म ग	रे — स —
बि र ह ण	कौं — सिं —	गा — र न	भा — वे —
प — प प̇	प — प —	म ग म प	म ग म —
है — को ई	ऐ — सा —	रा — म मि	ला — वे —
स ऩी स स	रे — रे —	रे गं म ग	रे — स —
बि र ह ण	कौं — सिं —	गा — र न	भा — वे —

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्तरा

स	रे	स	नी	स	—	रे	रे	रे	ग	म	ग	रे	रे	स	—
त्रि	स	रे	—	अं	—	ज	न	मं	—	ज	न	ची		रा	--
प	प	प	—	म	ग	—	रे	रे	ग	म	ग	रे	--	स	—
बि	र	हा	—	वि	था	—	ग्रह	व्या	—	पी	—	पी	--	रा	—
स	नी	स	स	रे	—	रे	—	रे	ग	म	ग	रे	—	स	--
त्रि	र	ह	ण	कौं	—	सि	—	गा	—	र	न	भा	—	वे	—

भजन नं० ३

आवो प्यारे मीत हमारे,
निस-दिन देखूँ पांव तुम्हारे ॥
सेज हमारी पीव संवारी,
दासि तुम्हारी सो धन नारी ॥
जें तुझ पाऊँ अंग लगाऊँ,
क्यूँ समझाऊँ बारन जाऊँ ॥
पंथ निहारूँ बाट संवारूँ
दादू तारूँ तन मन वारूँ ॥

(दादू दयाल)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल कहरवा

स्थाई

×	×	×	×
प — प —	प — म —	प ध नी सं	नी ध प —
आ — वो —	प्या — रे —	मी — त ह	मा — रे --
प ध प म	म प म ग	ग म ग रे	स स —
नि स दि न	दे — खूं —	पां — व तुम	हा -- रे —

अन्तरा

नी — नी नी	नी -- ध प	ध -- नी नी	सं — सं --
से — ज ह	मा -- री —	पी -- व सं	वा — री —
नी — नी नी	ध प म म	प ध नी सं	नी ध प --
दा — सी तु	म हा — री	सो — ध न	वा -- री --
प ध प म	म प म ग	ग म ग रे	स -- स --
नि स दि न	दे -- खूं —	पां -- व तु	हा -- रे --
प — प —	प -- म —	प ध नी सं	नी ध प --
आ — वो —	प्या— रे —	मी -- त ह	मा -- रे --

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० ४

राम रस मीठा रे, कोई पीवे साधु सुजाण।
सदा रस पीवे प्रेम सूँ, सो अविनाशी प्राण॥
राम रस............

इहि रस मीठा लागे सबै, ब्रह्मा विसनु-महेस।
सुर-नर साधू-सन्त जन, सो रस पीवे सेस॥
राम रस............

सिध-साधक जोगी-जती, सती सबै सुखदेव।
पीवत अन्त न आवई, ऐसा अलख अभेव॥
राम रस............

इहि रस राते नामदेव, पीपा अरु रैदास।
पिवत कबीरा न थक्या, अजहूँ प्रेम प्यास॥
राम रस............

यह रस मीठा जिन पिया, सो रसहीं माहिं समाई
मीठे मीठा मिलि रह्या, दादू अनल न जाई॥
राम रस............

(दादू दयाल)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल कहरवा

स्थाई

×	×	×	×
ध़ ध़ स स	रे — प --	म — म प	ग — ग रे
रा म र स	मी — ठा —	रे -- को ई	पी — वे —
रे — ग ग	रे — स —	ध़ ध़ स स	रे — प —
सा -- धु सु	जा -- न —	स दा र स	पी — वे —
म -- म प	ग -- ग रे	रे -- ग ग	रे -- स —
प्रे — म —	सूं -- अ वि	ना -- शी —	प्रा — ण —
ध़ ध़ स स			
रा म र स			

अन्तरा

म म म म	म — म —	प — प प	प — — —
इ ही र स	मी — ठा —	ला — गे स	वै — — —
ध — ध —	ध ध प —	नों ध — प	— — — —
ब्र — ह्मा —	वि ष णु —	म हे — स	— — — —
प ध प म	म प म ग	ग प म ग	रे — — —
सु र न र	सा — धू —	सं — त ज	न — — —
स — रे रे	स रे स ग	रे — स —	— — — —
सो — र स	पी — वे —	से — स —	— — — —
ध़ ध़ र स	रे — प —	म	
रा म र स	मी — ठा —	रे	

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० ५

सोई सुहागिन साँच सिंगार,
तन-मन लाई भजै भरतार।
आव-भगत और प्रेम लौ लावै,
नारी सोई सुख सदा पावै।
सहज संतोष सील जब आया,
तब नारी नाह अमोलिक पाया।
तन मन जोबन सौंपि सब दीन्हा,
तब कंत रिझाई आप बस कीन्हा।
दादू बहुरि वियोग न होई,
पिवसुं प्रीति सुहागिन सोई।

(दादू दयाल)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहरवा ताल

स्थाई

×				×				×				×			
प	—	प	प	प	—	म	म	प	—	ध	नी	ध	प	—	प
सो	—	ई	सु	हा	—	ग	न	सां	—	च	सिं	गा	—	—	र
प	ध	प	म	ग	—	रे	—	रे	ग	म	ग	रे	—	स	—
त	न	म	न	ला	—	ई	—	भ	जै	भ	र	ता	—		—

अन्तरा

नी	—	नी	नी	ध	प	म	—	प	ध	नी	सं	नी	ध	प	—
भा	—	व	भ	ग	त	औ	र	प्रे	--	म	लौ	ला	--	वै	—
प	ध	प	म	ग	—	ग	रे	रे	ग	म	ग	रे	--	स	—
ना	—	री	—	सो	—	ई	—	सु	ख	स	दा	पा	--	वै	--
प	—	प	प	प	—	म	म	प	--	ध	नी	ध	प	—	प
सो	—	ई	सु	हा	—	ग	न	सां	--	च	सिं	गा	—	—	र
प	ध	प	म	ग	--	रे	--	रे	ग	म	ग	रे	—	स	—
त	न	म	न	ला	--	ई	--	भ	जै	भ	र	ता	—	र	—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० ६

माटी खुदी करेंदी यार।
माटी जोड़ा माटी घोड़ा,
माटी दा असवार॥
माटी खुदी करेंदी यार।

माटी माटी नूँ मारन लागी,
माटी दे हथियार।
जिस माटी पर बहुती माटी,
तिस माटी हंकार॥

माटी बाग, बगीचा माटी,
माटी दी गुलजार।
माटी माटी नू देखन आई,
है माटी दी बहार॥

हँस खेल फिर माटी होई,
पौंदी पाँव पसार।
'बुल्लेशाह' बुझारत बूझी,
लाह सिरों भों मार॥

(बुल्लेशाह)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल कहरवा

स्थाई

×	×	×	×
स — स —	स रे स नी	स — रे —	ग म — म
मा — टी —	खु दी — क	रें — दी —	या — — र
म प म ग	रे ग रे स	स रे स नी	स — — स
मा — टी —	खु दी — क	रें — दी —	या — — र

अन्तरा

प — प —	प -- म ग	म — प म	ग रे स —
मा — टी —	जो -- ड़ा --	मा — टी —	घो — ड़ा —
स म ग —	रे — स नी	रे — रे —	रे ग म —
मा — टी	दा — अ स	वा — — र	हो — — —
म प म ग	रे ग रे स	स रे स नी	स — — स
मा — टी —	खु दी — क	रें — दी —	या — — र
स — स -	स रे स नी	स — रे —	ग म — म
मा — टी —	खु दी — क	रें — दी —	या — —

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० ७

अब तो जाग मुसाफिर प्यारे !
रैन घटी, लटके सब तारे ।

आवा गौन सराई डेरे,
साथ तयार मुसाफिर तेरे ।
अजे न सुनदा कूच नगारे ॥

करले आज करन दी वेला,
बहुरि न होसी आवन तेरा ।
साथ तेरा चल चल्ल पुकारे ॥

आपो अपने लाहे दौड़ी,
क्या सरधन क्या निरधन बौरी ।
लाहा नाम तू लेहु संभारे ॥

'बुल्ले' सहूदी पैरी परिये,
गफलत छोड़ हीला कुछ करिये ।
मिरग जतन बिन खेत उजारे ॥

[बुल्लेशाह]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल कहरवा

स्थाई

×				×				×				×			
नी	नी	नी	—	रे	—	रे	रे	रे	ग	म	ग	रे	—	रे	—
अ	ब	तो	—	जा	—	ग	मु	सा	—	फि	र	प्या	—	रे	—
प	—	प	प	म	—	ग	म	प	—	प	म	ग	रे	स	—
रैं	—	न	घ	टी	—	ल	ट	के	—	स	ब	ता	—	रे	—
नी	नी	नी	—	रे	—	रे	रे	रे	ग	म	ग	रे	—	रे	—
अ	ब	तों	—	जा	—	ग	मु	सा	—	फि	र	प्या	—	रे	—०

अन्तरा

प		प	—	प	प	म	ग	म	—	प	—	ग	रे	स	—
आ	—	वा	—	ग	व	न	स	रा	—	ई	—	डे	—	रे	—
प	—	प	प	प	—	म	ग	म	—	प	प	ग	रे	स	—
सा	—	थ	तै	या	—	र	मु	सा	—	फि	र	ते	—	रे	—
स	स	—	स	स	रे	स	नी	नी	—	रे	रे	रे	ग	म	—
अ	जे	—	न	सु	न	दा	—	कू	—	च	न	का	—	रे	—
प	—	प	प	म	—	ग	म	प	—	प	म	ग	रे	स	—
रैं	—	न	घ	टी	—	ल	ट	के	—	स	ब	ता	—	रे	—
नी	नी	नी	—	रे	—	रे	रे	रे	ग	म	ग	रे	—	रे	—
अं	ब	तो	—	जा	—	ग	मु	सा	—	फि	र	प्या	—	रे	—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० ८

कद मिलसी मैं बिरहों सताईं नूँ ।
आप न आवै, ना लिखि भेजै,
भट्ठि अजे ही लाई नूँ ।
तैं जेहा कोइ होर नाँ जाणा,
मैं तनि सूल सवाईं नूँ ॥
रात - दिनें आराम न मैनूँ,
खावै बिरह कसाई नूँ ।
'बुल्लेशाह' धृग जीवन मेरा,
जौंलग दरस दिखाई नूँ ॥

(बुल्लेशाह)

ताल कहरवा

स्थाई

×				×				×				×			
ध़	ध़	स	स	ग	—	—	—	ग	प	म	ग	र	—	—	—
क	द	मि	ल	सी	—	—	—	क	द	मि	ल	सी	—	—	—
रे	रे	रे	रे	रे	—	रे	—	रे	रे	—	ग	रे	—	स	—
क	द	मि	ल	सी	—	मैं	—	बि	र	ह	स	ता	ई	—	नूँ
ध़	ध़	स	स	ग	—	—	—	ग	प	म	ग	रे	—	—	—
क	द	मि	ल	सी	—	—	—	क	द	मि	ल	सी	—	—	—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्तरा

प	—	प	प	प	—	प	—	ग	—	ग	प	ग	रे	स	—
आ	—	प	न	आ	—	वे	—	ना	—	लि	ख	भे	—	जे	—
ध़	स	—	ध़	स	—	स	—	स	रे	रे	म	ग	रे	—	—
भ	ठ्ठि	—	अ	जे	—	ही	—	ला	—	ई	—	नूँ	—	—	—
रे̱	रे	रे̱	रे	रे	—	रे	—	रे̱	रे	—	ग	रे	—	स	—
क	द	मि	ल	सी	—	मैं	—	बि	र	ह	स	ता	—	ई	नूँ
ध़	ध़	स	स	ग	—	—	—	ग	प	म	ग	रे	—	—	—
क	द	मि	ल	सी	—	—	—	क	द	मि	ल	सी	—	—	—

भजन नं० ६

राग यमन

राम मैं पूजा कहा चढ़ाऊँ।
फल अरु फूल अनूप न पाऊँ॥

थनतर दूध जो बछरु जुठारी।
पुष्प भँवर जल मीन बिगारी॥

मलयागिरि बेधि भुअंगा।
विष अमृत दोउ एकै संगा॥

मन ही पूजा मन ही धूप।
मन ही सेऊँ सहज सरूप॥

पूजा अरचा न जानुँ तेरी।
कह 'रैदास' कवन गति मेरी॥

(रैदास)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीन ताल

×	2 स्थाई	०	3
	ध़ स रे ग	प — प —	मं — ग रे
	रा म मैं —	पू — जा —	क — हां च
ग रे स —	प प प प	प — प प	नी — ध प
ढ़ा — ऊँ —	फ ल औ र	फू — ल अ	नू — प न
मं प म ग	ध़ स रे ग	प — प —	मं — ग रे
पा — ऊँ —	रा म मैं —	पू — जा —	क — हां च
ग रे स —	ध़ स रे ग		
ढ़ा — ऊँ —	रा म मैं —		

अन्तरा

	ग ग ग ग	प — ध प	सं सं सं सं
	थ न त र	दू — ध जो	व छ रो जु
नी रें सं —	नी नी नी नी	नी — ध नी	सं रें नी सं
ठा — री —	पु ष्प भं व	र — ज ल	मी — न वि
नी ध प —	प — प प	प — प —	नी — ध प
गा — री —	म — ल या	गि — रि —	बे — धि भु
मं ग मं —	ग ग ग रे	ग ग प —	ग प ग रे
अं — गा —	वि ष अ म	रि त दो —	ए — के —
नी़ रे स —			
सं — गा —			

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० १०

गाइ गाइ अब का कहि गाऊँ।
गावनहार को निकट बताऊँ॥

जबलग है या तन की आसा, तबलग करै पुकारा।
जब मन मिल्यौ आस नहिं तन की, तब को गावनहारा॥
गाइ गाइ.........

जबलग नदी न समुद्र समावै, तबलग बढ़ै हंकारा।
जब मन मिल्यौ राम-सागर सों, तब यह मिटी पुकारा॥
गाइ गाइ.........

जबलग भगति मुकति की आसा, परम तत्त्व सुनि गावै।
जहँ-जहँ आस धरत है यह मन, तहँ-तहँ कछु न पावै॥
गाइ गाइ.........

छांड़े आस निरास परमपद, तब सुख सति कर होई।
कह रैदास जासों और करत है, परम तत्त्व अब सोई॥
गाइ गाइ.........

(रैदास)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल कहरवा

स्थाई

×	×	×	×
स रे स नी	स रे ग म	प म ग रे	स — — —
गा इ गा ई	अ ब का —	क हि गा —	ऊँ — — —
प — प प	म — ग रे	रे ग म ग	रे रे स —
गा — व न	हा — र को	नि क ट ब	ता — ऊँ
स रे स नी	स रे ग म	प म ग रे	स — — —
गा इ गा इ	अ ब का —	क हि गा —	ऊँ — — —

अन्तरा

प प प प	म प ग म	प प नी —	सं -- सं --
ज ब ल ग	है — य ह	त न की —	आ -- सा --
नी नी नी नी	ध — प म	म प ध नी	सं नी ध प
त ब ल ग	क रै — —	पु का — —	-- -- रा --
प प प प	म ग रे --	रे ग म ग	रे रे स —
ज ब ल ग	मि लि यो --	आ — स नई	त न की —
स रे स नी	स रे ग म	प म ग रे	स -- -- --
त व को —	गा — व न	हा — -- —	रा -- -- --

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० ११

ना वह रीझै जप-तप कीन्हें,
ना आतम को जारे।
ना वह रीझै धोती टांगे,
ना काया के पखारे ॥

दया करै धरम मन राखै,
घर में रहै उदासी।
अपना - सा दुख सबका जानै,
ताहि मिलै अविनासी ॥

सहै कुसब्द बादहूँ त्यागै,
छांड़े गरब गुमाना।
यही रीझ मेरे निरंकार की,
कहत मलूक दिवाना ॥

(मलूकदास)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहरवा ताल

स्थाई

×	×	×	×
नी — नी नी	सं — — —	नी सं रें सं	नी ध प —
ना — वह री	झे — — —	ज प त प	की — ने —
प नी ध प	म ग म प	म ग म —	— — — —
ना — आ —	त म को —	जा — रे —	— — — —
ग — ग ग	ग — — —	स ग म ग	म प प —
ना — वह री	झे — — —	धो — ती —	टां — गे —
म ध प म	ग रे स रे	ऩी ऩी सं —	— — — —
ना — का —	या — के प	खा — रे —	— — — —

अन्तरा

म म — म	प — नी —	सं सं सं सं	रें नी सं —
द या — क	रे — ध —	र म म न	रा - खे —
रें रें रें —	गं रें सं रें	सं नी सं —	रेसं नीध ध —
घ र में —	र हे — उ	दा — सी —	— — — —
सं सं सं —	सं — सं रें	नी नी ध नी	नी — ध —
अ प ना —	सा — दुः ख	स ब का —	जा — ने —
प ध प म	_ रे रे ग	रे — स —	— — — —
ता — हि मि	लें — अ व	ना — सी —	— — — —

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० १२

वह पुरुषोत्तम मेरा यार ।
नेह लगी टूटै नहीं तार ॥

तीरथ जाऊँ न बर्त करूँ ।
चरनकमल को ध्यान धरूँ ॥

प्रानपियारे मेरेहिं पास ।
बन बन माहिं न फिरूँ उदास ॥

पढ़ूँ न गीता - बेद · पुरान ।
एकहिं सुमिरूँ श्रीभगवान ॥

औरन कों नहिं नाऊँ सीस ।
हरि ही हरि हैं बिस्वेबीस ॥

काहू की नहिं राखूँ आस ।
तृस्ना काटि दई है फाँस ॥

उद्यम करूँ न देखूँ दाम ।
सहजहिं हुवे रहैं पूरन काम ॥

(चरनदास)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल कहरवा

स्थाई

×				×				×				×			
स	—	स	स	स	रे	स	नी	नी	—	रे	—	रे	ग	म	—
व	ह	प	र	षो	—	त्त	म	मे	—	रा	—	या	—	र	—
भ	प	म	ग	रे	—	रे	—	रे	ग	म	ग	रे	—	स	—
ने	—	ह	ल	गी	—	टू	—	टे	—	न	हीं	ता	—	र	—

अन्तरा

नी	—	नी	नी	ध	—	प	म	प	ध	नी	सं	नी	ध	प	—
ती	—	र	थ	जा	—	ऊँ	न	व	र	त	क	रूँ	—	—	—
प	ध	प	म	ग	रे	रे	—	रे	ग	म	ग	रे	स	—	—
च	र	न	क	म	ल	को	—	ध्या	—	न	ध	रूँ	—	—	—
स	—	स	स	स	रे	स	नी	नी	—	रे	—	रे	ग	म	—
व	ह	प	र	षो	—	त्त	म	मे	—	रा	—	या	—	र	—
म	प	म	ग	रे	—	रे	—	रे	ग	म	ग	रे	—	स	—
ने	—	ह	ल	गी	—	टू	—	टे	—		हीं	ता	—	र	—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० १३

जसौदा तेरे भाग की कही न जाय।

जो मूरति ब्रह्मादिक दुरलभ,
सो प्रगटे है आय ॥
जसौदा तेरे भाग की कही न जाय।

सिव नारद सनकादि महामुनि,
मिलिबे करत उपाय।
ते नँदलाल धूरि - धूसर - बपु,
रहत गोद लिपटाय ॥

रतन जड़ित पौढ़ाय पालनै,
बदन देखि मुसकाइ।
झूलौ मेरे लाल बलिहारी,
परमानंद जस गाइ ॥

(परमानन्द दास)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल कहरवा

स्थाई

×	×	×	×
स	स रे स नी	स — रे —	रे म ग रे
ज	सो दा ते रें	भा ग की —	क ही — न
स — स स	ग — ग ग	ग — ग ग	म — म म
जा — ये ज	जो — मू र	ती — ब्र ह्म	मा — दि क
म प म म	म प म ग	रे स स रे	स ऩी — —
दु र ल भ	सो — प र	ग टे है —	आ — ये —
— — — स	स रे स नी		
— — — ज	सौ दा ते रें		

अन्तरा

	प प प —	म प ग म	प — नी —
	सि व ना —	र द स न	का — दी —
सं सं सं सं	सं सं सं रें	सं नी ध ध	ध स नी ध
म हा मु नि	मि लि वे —	क र त उ	पा — — —
प — — —	प — प प	प — प —	प ध प म
ये — — —	तैं — न न्द	ला — ल —	धू रि धू —
ग रे स स	स रे स नी	स — रे —	रे म ग रे
स र ब पु	र ह ते —	गो — दी —	लि प टा —
स — — स	स रे स नी		
ये — — ज	सौ दा ते रें		

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० १४

राग भीम पलासी

कौन रसिक है इन बातन कौ।
नंद - नंदन बिन कासों कहिये,
सुनरी सखी मेरौ दुख या मन कौ ॥
कौन रसिक.........

कहाँ वह जमुनापुलिन मनोहर
कहाँ वह चंद सरद रातिन कौ।
कहाँ वह मंद सुगंध अमल रस
कहाँ वह षटपद जल जातन कौ ॥

कहाँ वह सेज पौढ़िबौ बन कौ,
फूल बिछौना मृदु पातन कौ।
कहाँ वह दरस परस परमानंद,
कोमल तन कोमल गातन कौ ॥

(परमानन्ददास)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीन ताल

×	2	स्थाई ०	3
		नी — ध प	म प ग म
		कौ — न र	सि क है —
प प ग म	ग रे स —	नी — प नी	स स स स
इ न बा —	त न कौ —	नं — द नं	द न बि न
म — ग —	रे रे सं —	नी नी ध प	म प ग म
का — सों —	कहै — यो —	सु न री स	खी — मे री
प प ग म	ग रे स —		
दु खि या —	म न कौ —		

अन्तरा

		प — प —	म प ग म
		क हाँ — वह	ज मु ना —
प प नी नी	सं — सं सं	सं सं सं गं	रें — सं सं
पु लि न म	नो — ह र	क हाँ व ह	चं — द स
नी नी ध सं	नी ध प —	नी नी नी —	नी — नी नी
र द र ति	य न को —	क हाँ व ह	मं — द सु
ध ध ध सं	नी ध प —	नी नी ध प	म प ग म
गं ध अ म	ल र स —	क हाँ व ह	ष ट प द
प प ग म	ग रे स —		
ज ल जा —	त न कौ —		

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० १५

राग भैरव

राम-कृष्ण कहिये उठि भोर।
अवध-ईस वे धनुष धरे हैं,
यह ब्रज-माखन-चोर।।
राम-कृष्ण कहिये उठि भोर।

उनके छत्र चँवर सिंहासन,
भरत सत्रुहन लछमन जोर।
इनके लकुट मुकुट पीताम्बर,
नित गायन-संग नंद-किसोर।।

उन सागर में सिला तराई,
इन राख्यौ गिरि नख की कोर।
'नन्ददास' प्रभु सब तजि भजिये,
जैसे निरखत चंद चकोर।।

(नन्ददास)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल तीन

स्थाई

×				2				०				3			
								ध	—	प	म	ग	म	प	म
								रा	—	म	कृ	ष्	ण	के	—
ग	—	रे	रे	स	—	—	स	नी़	नी़	ध	—	नी	—	स	स
यें	—	उ	ठ	भो	—	—	—	अ	व	धे	—	ई	—	स	वे
ग	ग	म	ग	रे	रे	स	—	म	—	ग	म	प	—	ध	ध
ध	नु	ष	ध	रे	—	हैं	—	य	ह	ब्र	ज	मा	—	ख	न
सं	—	—	नीसं	नी	ध	प	म								
चो	—	—	—	—	—	—	र								

अन्तरा

								म	म	प	—	ध	ध	नी	नी
								उ	न	के	—	छ	त	र	चं
सं	सं	सं	—	रें	नी	सं	—	नी	सं	नी	ध	प	—	म	म
ब	र	सिं	—	हा	—	स	न	भ	र	त	स	त्रु	—	घ	न
म	—	प	ध	नी	—	सं	—	रें	सं	नी	ध	प	म	ग	म
ल	—	छ	मन	जो	-	र	—	इ	न	के	—	ल	कु	ट	मु
ग	रे	ग	म	ग	रे	स	स	म	म	म	—	प	प	ध	ध
क	ट	पी	—	ता	—	म्ब	र	नि	त	गा	—	य	न	सं	ग
सं	—	नी	ध	प	म	—	म								
नं	—	द	कि	सो		—	र								

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० १६

छैल जो छबीला, सब रंग में रंगीला, बड़ा,
चित्त का अड़ीला, कहूँ देवतों से न्यारा है।
माल गले सोहै, नाम-मोती सेत जोहै, कान
कुंडल मन मोहै, लाल मुकट सिर धारा है॥
दुष्टजन मारे, सब संत जो उबारे 'ताज़'
चित्त में निहारे प्रन प्रीति करनवारा है।
नंदजू का प्यारा, जिन कंस को पछारा, वह
वृन्दावनवारा, कृष्ण साहब हमारा है॥

(ताज़)

ताल कहरवा

स्थाई

×				×				×				×		
स	स	ग	म	प	प	प	प	प	ध	प	म	ग	प	म —
छै	ल	जो	छ	बी	ला	स	ब	रं	ग	में	रं	गी	ला	व ड़ा
ग॒	ग॒	रे	स	रे	ग॒	म	प	ग॒	म	ग॒	रे	स	स	स —
चि	त्त	का	अ	ड़ी	ला	क	हूँ	दे	व	ता	सों	न्या	रा	है —
स	स	ग	म	प	प	प	प	प	ध	प	म	ग	प	म —
मा	ल	ग	ले	सो	है	ना	क	मो	ती	से	त	जो	हैं	का न
ग॒	ग॒	रे	स	रे	ग॒	म	प	ग॒	म	ग॒	रे	स	स	स —
कुँ	ड	ल	मन	मो	है	ला	ल	मु	कु	ट	सिर	धा	—	रा है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन न० १७

सुनो दिलजानी मेरे दिल की कहानी तुम,
दस्त ही बिकानी बदनामी भी सहूँगी मैं।
देवपूजा ठानी मैं निवाजहू भुलानी, तजे
कलमा-कुरान साड़े गुननि गहूँगी मैं॥
साँवला-सलोना सिर ताज सिर कुल्ले दिये,
तेरे नेह दाग में निदाघ हुवे हैं दहूँगी मैं।
नन्द के कुमार, कुरबान तेरी सूरत पै,
हौं तौ मुग़लानी हिंदुवानी हुये रहूँगी मैं॥

(ताज़)

ताल कहरवा

स्थाई

×				×				×				×			
स	स	ग	म	प	प	प	प	प	ध	प	म	ग	प	म	—
सु	नो	दि	ल	जा	नी	मे	रे	दि	ल	की	क	हा	नी	तु	म
ग॒	ग॒	रे	स	रे	ग॒	म	प	ग॒	म	ग॒	रे	स	स	स	—
द	स	त	ही	बि	का	नी	ब	द	ना	मी	भी	स	हूँ	गी	मैं
स	स	ग	म	प	प	प	प	प	ध	प	म	ग	प	म	—
दे	व	पू	जा	ठा	नी	मैं	नि	वा	ज	हूँ	भु	ला	नी	त	जे
ग॒	ग॒	रे	स	रे	ग॒	म	प	ग॒	म	ग॒	रे	स	स	स	—
क	ल	मा	कु	रा	न	सा	ड़े	गु	र	ना	न	ग	हूँ	गी	मैं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० १८

राग आसावरी

दुनिया भरम भूल बौराई;
आतमराम सकल घट भीतर
जाकी सुद्ध न पाई।

मथुरा कासी जाय द्वारिका, अरसठ तीरथ न्हावै।
सतगुरु बिन सोधा नहिं कोई, फिर-फिर गोता खावै॥
चेतन मूरत जड़को सेवै, बड़ा थूल मत गैला।
देह-अचार किया कहा होई, भीतर है मन मैला॥
जप-तप-संयम काया-कसनी, साँख्य जोग व्रत दाना।
यातें नहीं ब्रह्मसे मेला, गुनहर करम बंधाना॥
बकता हुवे हुवे कथा सुनावै, स्रोता सुन घर आवै।
ज्ञान-ध्यान की समझ न कोई, कह-सुन जनम गँवावै॥
जन दरिया, यह बड़ा अचम्भा, कहे न समझै कोई।
भेड़-पूँछ गहि सागर लांघै, निश्चय डूबै सोई॥

(दरिया साहिब)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल तीन

स्थाई

×				×				×				×			
								रे	—	म	—	प	म	प	सं
								दु	निया	भ	र	म	भू	ल	बौ
ध	—	प	ध	प	म	गुरे	स	ग	ग	ग	ग	ग	—	ग	ग
रा	—	ई	दु	नियां	—	भ	र	आ	—	त	म	रा	—	म	स
रे	—	रे	रे	ग	रे	स	—	रे	—	म	म	प	म	प	सं
क	—	ल	घर	भी	—	त	र	जा	—	की	—	सु	ध	—	न
ध	—	प	ध	प	म	गुरे	स								
पा	—	ई	दु	नि	—	यां	भ								

अन्तरा

								म	म	प	प	ध	ध	नी	ध
								म	थु	--	रा	का	--	सी	--
सं	—	सं	सं	रें	नी	सं	सं	प	--	प	--	सं	--	सं	सं
जा	—	य	द्वा	—	रि	का	—	अ	र	स	ठ	ती	--	र	थ
रें	ग	रें	सं	नी	ध	प	—	सं	--	सं	सं	नी	सं	ध	प
न्हा	—	—	—	--	--	वे	—	स	त	गु	र	बि	--	न	सौ
ग	—	ग	—	रे	—	स	--	रे	--	म	म	प	म	प	सं
दा	—	न	हीं	को	--	ई	--	फि	र	फि	र	गो	--	ता	--
ध	—	प	ध	प	म	गरे	स								
खा	—	वे	दु	नि	यां	भर	म								

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० १९

राग आसावरी

नाम बिन भाव करम नहिं छूटै ।
साध संग और राम-भजन बिन
काल निरन्तर लूटै ।
नाम बिन भाव करम नहिं छूटै ।

मल सेती जो मल को धोवै
सो मल कैसे छूटै ।
प्रेम का साबुन नाम का पानी
दोय मिल ताँता टूटै ॥

भेद-अभेद भरम का भांड़ा
चौड़े पड़-पड़ फूटै ।
गुरु-मुख-सब्द गहै उर-अंतर
सकल भरम से छूटै ॥

राम का ध्यान तू धर रे प्रानी
अमरत का मेंह बूटै ।
जन दरियाव, अरप दे आपा
जरा-मरन तब टूटै ॥

(दरिया साहिब)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल तीन

स्थाई

×	×	×	×
		रे — म म	प म प सं
		भा — व क	र म ना हीं
धृ — प —	प म गृरे स	गृ गृ गृ गृ	गृ — गृ गृ
छू — टे —	ना म बी ना	सा ध सं —	ग — औ र
रे — रे रे	गृ रे स स	रे — म म	प म प सं
रा — म भ	ज न बि ना	का — ल नि	रं — त र
धृ — प धृ	प म गृरे स		
लू — टे —	ना म बि ना		

अन्तरा

		म म प प	धृ धृ नृी धृ
		म ल से —	तीं — जो —
सं सं सं —	रें नी सं सं	प — प प	सं — सं सं
म ल को —	धो — वे —	सो — म ल	कै — से —
रें गृ रें सं	नृी धृ प —	सं — सं सं	नृी सं धृ प
छू — टे —	— — — —	प्रे — म का	सा — ब न
गृ — गृ गृ	रे — स —	रे — म म	प म प सं
ना — म का	पा — नी —	दो नों मि ल	तां — ता —
धृ — प धृ	प म गृरे स		
छू — टे —	ना म बि न		

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० २०

आदि अन्त मेरा है राम,
उन बिन और सकल बेकाम।
कहा करूँ तेरा वेद-पुराना,
जिन है सकल सकत वरमाना ॥

कहा करूँ तेरी अनुभौ-बानी,
जिनतें मेरी बुद्धि भुलानी।
कहा करूँ ये मान-बड़ाई,
राम बिना सब ही दुखदाई ॥

कहा करूँ तेरा सांख्य और जोग
राम बिना सब बन्धन रोग।
कहा करूँ इन्द्रिन का सुक्ख,
राम बिना देवा सब दुक्ख ॥

'दरिया' कहै राम गुरुमुखिया
हरि बिन दुखी रामसंग सुखिया ॥

(दरिया साहिब)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल कहरवा

स्थाई

×				×				×				×			
स	—	स	—	स	—	ऩी	ध़	ऩी	—	रे	—	ग	—	—	म
आ	—	दि	—	अं	—	त	मे	रा	—	है	—	रा	—	—	म
ग॒	ग॒	ग॒	ग॒	रे	—	स	ऩा	स	स	ग॒	रे	स	—	—	स
उ	न	बि	न	औ	—	र	स	क	ल	वे	—	का	—	—	म
स	—	स	—	स	—	ऩी	ध़	ऩी	—	रे	—	ग	—	—	म
आ	—	दि	—	अं	—	त	मे	रा	—	है	—	रा	—	—	म

अन्तरा

ग	ग	—	ग	ग	—	ग	स	ग	म	म	प	म	ग	म	—
क	हा	—	क	रूँ	—	ते	रा	वे	—	द	पु	रा	—	ना	—
ग॒	ग॒	ग॒	—	रे	रे	स	ऩी	स	स	ग॒	ग॒	रे	—	स	—
जि	न	है	—	स	क	ल	स	क	त	ब	र	मा	—	ना	—
स	—	स	—	स	—	ऩी	ध़	ऩी	—	रे	—	ग	—	—	म
आ	—	दि	—	अं	—	त	मे	रा	—	है	—	रा	—	—	म

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० २१

बाबुल कैसे बिसरा जाई ?
जदि मैं पति-संग रल खेलूँगी
आपा धरम समाई ।।
बाबुल कैसे बिसरा जाई ?

सतगुरु मेरे किरपा कीन्ही,
उत्तम बर परनाई ।
अब मेरे साईं को सरम पड़ैगी
लेगा चरन लगाई ।।

तैं जानराय मैं बाली भोली,
तैं निर्मल मैं मैली ।
तैं बतरावै, मैं बोल न जानूँ,
भेद न सकूँ सहेली ।।

तैं ब्रह्म-भाव मैं आतम-कन्या,
समझ न जानूँ बानी ।
'दरिया' कहै पति पूरा पाया
यह निश्चय करि जानी ।।

(दरिया साहिब)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीन ताल

स्थाई

x	2	०	3
	नी ध प प	-- म ध प	ग़ -- म म
	बा -- बु ल	-- कै -- से	बि स रा --
प — प —	ग़ ग़ ग़ ग़	ग़ -- ग़ --	रे रे रे —
जा — ई —	य दि मैं प	ति -- सं --	ग र ल खे
रे ग़ रे स	प -- प ग़	-- रे म म	प -- प नी
-- लूँ गी --	आ -- पा ध	-- र म स	मा -- ई बा

अन्तरा

		रें -- रें रें	रें -- रें —
		स त गु रु	मे — रे —
रें ग़ं -- रें	सं नी सं सं	सं सं -- रें	नी़ ध प ध
कि र — पा	की -- न ही	उ त्त -- म	ब र प र
नी -- सं --	नी़ ध प प	सं सं सं रें	नी़ -- ध प
ना -- ई --	-- — — —	अ ब मे रे	सा -- ईं को
म ध प म	ग़ रे — —	प म ध प	ग़ -- म म
स र म प	ड़ गी — --	ले -- गा च	र न -- ल
प — प —	नी ध़ प प		
गा — ई —	बा -- बु ल		

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० २२

राग आसावरी

जोगी जुगति जोग कमान ।
सुखमना पर वैठि आसन, सहज ध्यान लगाव ।
जोगी जुगति......
दृष्टि सम करि सुन्न सोत्रो आपा मेटि उड़ाव ।
प्रगट जोति अकार अनुभव सब्द सोहं गाव ॥
छोड़ि मठको चलहु जोगी बिना पर उड़ि जाव ।
यारी कहै, यह मत विहंगम, अगम चढ़ि फल खाव ॥

(यारी साहिब)

ताल तीन

स्थाई

×	2	०	3
	–	रे — म —	प म प सं
		जो गी जु ग	ति जो ग क
ध — प ध	प म गुरे स	ग ग ग ग	ग -- ग ग
मा — न जो	गी — जु ग	सु ख म ना	प र बै —
रे — रे रे	ग रे स —	रे — म म	प म प सं
ठी — आ —	स — न —	स ह ज —	ध्या -- न ल
ध — प ध	प म गुरे स		
गा — व जो	गी — जु ग		

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्तरा

								म	म	प	प	ध	ध	नी	ध
								ट	—	ष्टि	—	स	म	क	रि
सं	--	सं	सं	रें	नी	सं	सं	प	—	प	—	सं	—	सं	सं
सु	--	न	—	सो	—	वो	--	आ	—	पा	—	मो	—	टी	उ
रें	ग	रें	सं	नी	ध	प	--	सं	--	सं	सं	नी	सं	ध	प
ड़ा	—	—	—	—	—	व	--	प्र	ग	ट	--	जो	--	ति	अ
ग	—	ग	—	रे	—	स	—	रे	—	म	म	प	म	प	सं
का	—	र	अ	नु	—	भ	व	स	—	ब	द	सो	—	हं	—
ध	—	प	ध	प	म	गरे	स								
गा	--	व	जो	गी	जु	—	ग								

भजन नं० ६

झिलमिल-झिलमिल बरसै नूरा,
नूर-जहूर सदा भरपूरा।
रुनझुन-रुनझुन अनहद बाजै,
भँवर गुंजार गगन चढ़ि गाजै।
रिमझिम-रिमझिम बरसै मोती,
भयो प्रकास निरंतर जोती।
निर्मल, निर्मल निर्मल नामा,
कह 'यारी' तहँ लियो विश्रामा।

साहिब)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल कहरवा

स्थाई

×				×				×				×			
स	—	स	—	स	—	नी	ध	नी	—	रे	—	ग	—	—	म
झि	ल	मि	ल	झि	ल	मि	ल	ब	र	सै	—	नू	—	—	रा
ग	ग	ग	ग	रे	—	स	नी	स	स	ग	रे	स	—	—	स
नू	—	र	ज	हू	—	र	स	दा	—	भ	र	पू	—	—	रा
स	—	स	—	स	—	नी	ध	नी	—	रे	—	ग	—	—	म
झि	ल	मि	ल	झि	ल	मि	ल	ब	र	सै	—	नू	—	—	रा

अन्तरा

ग	ग	—	ग	ग	—	ग	स	ग	म	म	प	म	ग	म	—
रु	न	झु	न	रु	न	झु	न	अ	न	ह	द	बा	—	जै	—
ग	ग	ग	—	रे	रे	स	नी	स	स	ग	ग	रे	—	स	—
भं	व	र	गुं	जा	—	र	ग	ग	न	च	ढ़ि	गा	—	जै	—
स	—	स	—	स	—	नी	ध	नी	—	रे	—	ग	—	—	म
झि	ल	मि	ल	झि	ल	मि	ल	ब	र	सै	—	नू	—	—	रा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० २४

विरहिनी मंदिर दियाना बार।

बिन बाती बिन तेल जुगत सों,
बिन दीपक उँजियार ॥

प्रानप्रिया मेरे गृह आये,
रचि - पचि सेज सँवार ॥

सुखमन सेज परम तत रहिया,
पिय निरगुन निरकार ॥

गावहु री मिलि आनँद-मंगल
'यारी' मिलिके यार ॥
(यारी साहिब)

ताल तीन

स्थाई

×	×	×	×
	नी̲	ध ध प प	— म ध प
	वि	र ह नि —	मं — दि र
ग̲ — म म	प — प —		
दि — या ना	बा — र —		

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्तरा

		रें — रें रें	रें — रें —
		बि न बा —	ती — बि न
रें गुं — रें	सं नी सं सं	सं सं — रें	नी ध प ध
ते — ल ज	ग — त सों	बि न — दी	प क उ जि
नी — सं —	नी ध प प	सं सं सं रें	नी — ध प
या — र —	— — — —	प्रा — ण —	पि — या मे
म ध प म	गु रे — —	प म ध प	गु — म म
रे — गृ ह	आ ये — —	र चि प चि	से — ज सं
प — प नी	ध ध प प		
वा — र बि	र ह नि —		

भजन नं० २५

राग वागेश्वरी

नयनों रे, चित-चोर बतावौ।
तुमहीं रहत भवन रखवारे, बांके बीर कहावौ॥
नयनों रे, चित-चोर बतावौ।
तुम्हरे बीच गयौ मन मेरौ, चाहै सौंहै खावौ।
अब क्यों रोवत हौ ढाई मारे, कहुँ तौ थाह लगावौ॥
घर के भेदी बैठी द्वार पै, दिन में घर लुटवावौ।
नारायन मोहि वस्तु न चहिये, लेनहार दिखावौ॥

(नारायण स्वामी)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल तीन

स्थाई

×	×	×	×
		सं — नी —	ध म प ध
		नै — नों -	रे — चि त
ग — रे स	रे — स —	नी नी ध नी	स स स —
चो — र व	ता — वौ —	तु म ही र	ह त भ —
म म ग ग	रे — स —	म — म —	ध — नी नी
व न र ख	वा — रे —	वां — के —	वी -- र क
सं — नी ध	म ग रे स		
हा — — —	— वे — —		

अन्तरा

		म म म --	ध -- नी ध
		तु म रे --	बी -- च ग
सं -- सं सं	रें नी सं —	सं -- गं —	रें -- सं --
यो - म न	मे -- रो --	चा -- हे --	सो -- हें --
नी -- ध --	म -- -- --	सं सं सं रें	नी -- ध ध
खा -- -- --	वो -- -- --	अ ब क्यों —	रो — व त
म -- प ध	ग -- रे स	म — म म	ध — नी नी
हों -- ढा ई	मा — रे —	क -- हूँ तो	था — ह ल
सं — नी ध	म ग रे स		
गा -- -- --	-- — वो —		

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० २६

राग बांगेश्वरी

टेर सुनों ब्रजराज - दुलारे ।
दीन मलीन हीन सब गुनते,
आय पर्यो हौं द्वार तिहारे ।।
टेर सुनों ब्रजराज - दुलारे ।

काम क्रोध अरु कपट मोह मद,
सो जानें निज प्रीतम प्यारे ।
भ्रमत रह्यो संग इन विषयन के,
तुव पदकमल न मैं उर धारे ।।

कौन कुकर्म किये नहिं मैंने,
जो गये भूलि सो लियो उधारे ।
ऐसी खेप भरी रचि पचिकैं,
चकित भये लखिकै बनिजारे ।।

अब तौ एक वार कहौ हँसिके,
आजहिते तुम भये हमारे ।
याहि कृपाते नारायन की,
वेगि लगेगी नाव किनारे ।।

(नारायण स्वामी)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल तीन

स्थाई

×	2	०	3
		सं — नी —	ध म प ध
		टे — र —	नों — ब्र ज
ग — रे स	रे — स —	नी नी ध नी	स स स —
रा — ज दु	ला — रे —	दी — न म	ली न ही —
म म ग ग	रे — स —	म — म —	ध — नी नी
न स ब गु	न — ते —	आ — य प	र्यो — हों द्वा
सं — नी ध	म ग रे स		
र — तु म	हा — रे —		

अन्तरा

		म म म —	ध — नी ध
		का — म क्रो	ध अ रु —
सं — सं सं	रें नी सं —	सं — गं —	रें — सं —
क प ट मो	ह — मैं द	सो — जा ने	नि — ज प्री
नी — ध —	म — —	सं सं सं रें	नी — ध ध
त म — प्या	रे — — —	भ्रम त रह यो	सं — ग —
म — प ध	ग — रे स	म — म म	ध — नी नी
इ न बि ष	यन — के —	तुव — प द	क म ल न
सं — नी ध	म ग रे स		
— उ र धा	रे — — —		

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० २७

है वहारे बाग़ दुनियां चंद रोज़
देखलो इसका तमाशा चंदरोज ।

ऐ मुसाफ़िर कूच का सामान कर
इस जहां में है बसेरा चदरोज़ ।
पूछा लुकमांसे जिया तू कितने रोज़ ?
दस्त हसरत मलके बोला, चंदरोज़ ॥

बाद मदफ़न क़ब्र में बोली कज़ा—
अब यहाँ पै सोते रहना चंदरोज़ ।
फिर तुम कहाँ, औ मैं कहाँ ऐ दोस्तो !
साथ है मेरा तुम्हारा चंदरोज़ ॥

क्या सताते हो दिले बेजुर्म को,
जालिमो, है ये ज़माना चंदरोज़ ।
याद कर तू ऐ नजीर ! क़बरों के रोज़
ज़िन्दगी का है भरोसा चंदरोज़ ॥

(नजीर)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल ढाई

स्थाई

×			2		3	
सं	—	नी॒	सं	रें	सं	—
है	—	व	हा	—	रे	—
नी॒	—	ध	प	ध	म	—
बा	—	ग	टु	नि	यां	—
प	—	ना॒	ध॒	—	प	—
चं	—	द	रो	—	—	ज़
स	—	रे	ग॒	—	प	प
दे	—	ख	लो	—	इ	स
ध॒	—	प	म	प	ग॒	—
का	—	त	मा	—	शा	—
रे	—	ग॒	स	—	स	—
चं	—	द	रो	—	ज़	—

अन्तरा

सं	—	नी॒	सं	रे	सं	सं
ऐ	—	मु	सा	—	फि	र
नी॒	—	ध	प	ध	म	—
कू	—	च	का	—	सा	—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प	—	नी	ध	—	प	—
मा	—	न	क	—	र	—
स	स	रे	ग	—	प	—
इ	स	ज	हां	—	में	—
ध	—	प	म	प	ग	—
है	—	ब	से	—	रा	—
रे	—	ग	स	—	स	—
चं	—	द	रो	—	ज़	—

भजन नं० २८

राग आसावरी

हरि को ऐसोइ सब खेल।
मृग-तृष्ना जग व्याप रही है
कहूँ बिजोरो न बेल॥
हरि को ऐसोइ सब खेल।

धनमद जोबनमद औ राजमद
ज्यों पंछिन में डेल।
कह हरिदास यहै जिय जानौ
तीरथ को सो मेल॥

(हरिदास)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल तीन

स्थाई

×				2				०				3			
								रे	—	म	—	प	म	प	सं
								ह	री	को	ऐ	सो	ही	स	ब
ध॒	—	प	ध॒	प	म	ग॒रे	स	ग॒	ग॒	ग॒	ग॒	ग॒	—	ग॒	ग॒
खे	—	ल	ह	री	—	को	—	मृ	ग	तृ	स	ना	—	ज	ग
रे	—	रे	रे	ग॒	रे	स	—	रे	—	म	म	प	म	प	सं
व्या	—	प	र	ही	—	है	—	क	हूँ	—	बि	जो	—	रो	न
ध॒	—	प	ध॒	प	म	ग॒रे	स								
बे	—	ल	ह	री	—	को	—								

अन्तरा

×				2				०				3			
								म	म	प	प	ध॒	ध॒	नि॒	ध॒
								ध	न	म	द	जो	ब	न	मद
सं	—	सं	सं	रें	नी	सं	सं	प	—	प	—	सं	—	सं	सं
औ	—	र	रा	—	ज	म	द	ज्यों	—	पं	—	छि	—	न	में
रें	ग॒	रें	सं	नि॒	ध॒	प	—	सं	—	सं	सं	नि॒	सं	ध॒	प
डे	—	—	—	—	—	ल	—	क	ह	ह	रि	दा	—	स	यह
ग॒	—	ग॒	—	रे	—	स	—	रे	—	म	म	प	म	प	सं
जि	—	या	—	जा	—	नो	—	ती	—	र	थ	को	—	सो	—
ध॒	—	प	ध॒	प	म	ग॒रे	स								
मे	—	ल	ह	री	—	को	—								

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० २६

जिन्हों घर झूमते हाथी,
हजारों लाख ये साथी।
इन्हीं को खा गई माटी;
तू खुशकर नींद क्यों सोया ?

नकारा कूच का बाजै,
कि मारू मौत का बाजै;
ज्यों सावन ,मेघला गाजै,
तू खुशकर नींद क्यों सोया ?

जिन्हों घर लाल और हीरे,
सदा मुख पान के बीड़े;
उन्होंको खा गये कीड़े;
तू खुशकर नींद क्यों सोया ?

जिन्हों घर पालकी घोड़े,
जरी जरबफ्त के: जोड़े;
वही अब मौत ने तोड़े,
तू खुशकर नींद क्यों सोया ?

जिन्हों संग नेह था तेरा,
किया उन खाक में डेरा;
न . फिर करने गये फेरा,
तू खुशकर नींद क्यों सोया ?

(खालस)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल कहरवा

स्थाई

×	×	×	×
स	ऩी — स स	म — — म	म — ग म
जि	नों — घ र	झू — — ल	ते — हा —
प — — प	प -- प --	ध़ — — ध़	ध — नी ध
थी — — ह	जा — रों —	ला -- -- ख	ये — सा —
प — — प	प — प ध़	सं -- -- सं	रें — गं रें
थी — — उ	न्हीं — को --	खा -- — ग	ईं — मा —
सं -- -- सं	स स नी नी	ध़ -- -- प	म ग रे —
टी -- -- तू	खु श क र	नी -- — द	क्यों — सो —
स — — स	ऩी -- स स		
या — — जि	नों -- घ र		

भजन नं० ३०

राग विहाग

तुम नाम-जपन क्यों छोड़ दिया ?
क्रोध न छोड़ा, झूठ न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ?
झूठे जग में दिल ललचाकर, असल वतन क्यों छोड़ दिया ?
कौड़ी को तो खूब सँभाला, लाल रतन क्यों छोड़ दिया ?
जिन सुमिरन से अति सुख पावै, तिन सुमिरन क्यों छोड़ दिया ?
'खालस' एक भगवान-भरोसे, तन मन धन क्यों छोड़ दिया ?

(खालस)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीन ताल

स्थाई

×	2	०	3
	स ऩी	स -- ग म	प प नी --
	तु म	ना -- म ज	प न क्यों --
सं — नी ध	प म प ध	ग -- ग रे	ग ग प --
छो — ड़ दि	या -- म न	ना -- म ज	प न क्यों —
ग म ग रे	स -- स ऩी		
छो — ड़ दि	या -- तु म		

अन्तरा

		ग -- ग म	प -- नी --
		क्रो -- ध न	छो -- ड़ा --
सं -- सं सं	रें नी सं —	नी -- नी नी	नी नी ध नी
झू -- ठ न	छो — ड़ा —	स -- त्य व	च न क्यों --
सं -- नी ध	प म प ध	ग — ग रे	ग ग प --
छो -- ड़ दि	या — म न	स — त्य व	च न क्यों —
ग म ग रे	स -- स ऩी		
छो — ड़ दि	या — तु म		

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० ३१

अगर है शौक मिलने का,
तो हरदम लौ लगाता जा।
जलाकर खुदनुमाई का,
भसम तन पर लगाता जा॥

पकड़कर इश्क की झाडू,
सफ़ाकर हिज्रए दिल को।
दुई की धूल को लेकर—
मुसल्ले पर उड़ाता जा॥

मुसल्ला फाड़, तसबी तोड़
किताबें डाल पानी में।
पकड़ तू दस्त फिरश्तों का
गुलाम उनका कहाता जा॥

न मर भूखों, न रख रोज़ा,
न जा मसजिद, न कर सिजदा।
वजू का तोड़ दे कूजा
शराबे शौक पीता जा॥

हमेशा खा, हमेशा पी,
न गफ़लत से रहो हरदम।
नशे में सैर कर अपनी
खुदी को तू जलाता जा॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

न हो मुल्ला, न हो ब्रहमन,
दुई को छोड़कर पूजा।
हुक्म है शाह कलंदर का
अनहलक़ तू कहाता जा॥

कहे 'मंसूर' मस्ताना
मैंने हक दिल में पहचाना।
वही मस्तों का मयख़ाना,
उसी के बीच आता जा॥

(मंसूर)

ताल कहरवा

स्थाई

×	×	×	×
ग॒	रे ग॒ स —	— रे — म	प प ध प
अ	ग र है —	— शो — क	मि ल ने --
सं ---- नी॒	ध प ग॒ रे	— रे — ग॒	म — रे ग॒
का ---- तो	ह र द म	— लौ -- ल	गा -- ता --
रे स -- ग	रे ग॒ स स	— रे र म	प प ध प
जा -- -- ज	ला — क र	— खु द नु	मा -- ई --
सं -- -- नी॒	ध प ग॒ रे	— रे रे ग॒	म -- रे ग॒
को — - भ	स म त न	— प र ल	गा -- ता --
रे स — ग॒	रे ग॒ स —		
जा — — अ	ग र है —		

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्तरा

म	म म म म	— प — प	नी — सं नी
प	क ड़ क र	— इ — शक	की — झा —
सं — — नी	नी — ना नी	— प प नी	सं रें सं नी
डू — — स	फा — क र	— हु ज रा	ऐ — दि ल
धप मगु रेस गु	रे गु स —	— रे — म	प — ध प
को — — ढु	ई — को —	— धू — ल	को — ले —
सं — — नी	ध प गु रे	— रे रे गु	म — रे गु
क — र मु	स ले — —	— प र उ	ड़ा — ता —
रे स — म	रे गु स —		
जा — — अ	ग र है —		

भजन नं० ३२

राग आसावरी

हरि बिनु को अपनौ संसार।
माया मोह बंध्यो जग बूड़त
काल नदी की धार॥
हरि बिनु को अपनौ संसार।

जैसे संकट होत नाव में
रहत न पैले पार।
सुत संपत्ति दारा सों ऐसे
बिछुरत लगै न बार॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जैसे सपने रंक पाय निधि
जानै कछू न सार।
ऐसे छिनभंगुर देही के
गरबहिं करत गँवार॥

जैसे अँधेरे टेकत डोलत
गनत न खाइ पनार।
ऐसे व्यास बहुत उपदेसे
सुनि-सुनि गये न पार॥

(व्यास जी)

ताल तीन

स्थाई

×	2	०	3
		रे — म —	प म प सं
		ह री बि नु	अ प नो सं
ध̲ — प ध̲	प म ग̲रे स	ग̲ ग̲ ग̲ ग̲	ग̲ — ग̲ ग̲
सा — र ह	री बि नु को	मा — या मो	ह -- वं ध्यो
रे — रे रे	ग̲ रे स —	रे — म म	प म प सं
ज — ग ब	हु — त —	का — ल न	दी -- की --
ध̲ — प ध̲	प म ग̲रे स		
धा — र ह	री बि नु को		

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्तरा

		म म प प	ध ध नी ध
		जै -- से —	सं क ट —
सं -- सं सं	रें नी सं सं	प -- प —	सं -- सं सं
हो -- त ना	-- व में --	र -- -- त	न — पै ले
रें ग रें सं	नी ध प --	सं -- सं सं	नी सं ध प
पा -- -- --	-- -- -- र --	सु त स म	प -- त्ति दा
ग -- ग --	रे -- स --	रे -- म म	प म प सं
रा -- सों --	ऐ -- से --	वि छु र त	ल — गै न
ध -- प ध	प म गुरे स		
बा -- र ह	री -- बिनु को		

भजन नं० ३३

जैये कौन के अब द्वार।
जो जिय होय प्रीति काहू के दुख सहियें सौ बार॥
जैये कौन के अब द्वार।
घर-घर राजस तामस बाढ़्यौ, धन-जोबन कौ गार।
काम-बिबस हुवे दान देत, नीचन को होत उद्धार॥
साधु न सूझत बात न बूझत, ये कलि के ब्यौहार।
व्यासदास कत भाजि उबरिये, परियें मांझी घार॥

(व्यास जी)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल कहरवा

स्थाई

×				2				०				3			
स	—	नी	ध	नी	—	रे	रे	रे	ग	म	ग	रे	—	स	—
लै	—	ये	—	कौ	—	न	के	अ	—	व	दु	वा	—	र	—
प	—	प	प	प	—	म	—	प	ध	नी	नी	ध	—	प	—
जो	—	जि	या	हो	—	ये	—	प्री	—	ति	का	हू	—	के	—
प	ध	प	म	ग	रे	स	नी	स	—	—	स	स	—	—	स
दु	ख	स	ह	ये	—	सौ	—	बा	—	—	र	आ	—	—	र

अन्तरा

म	म	प	प	नी	—	नी	नी	सं	—	सं	सं	रें	नी	सं	—
घ	र	घ	र	रा	—	ज	त	ता	—	प	स	ब	ढ़	यो	—
सं	रें	सं	नी	ध	प	ध	नी	ध	—	प	—	—	—	—	—
ध	न	जो	—	ब	न	कौ	—	गा	—	र	—	—	—	—	—
प	—	प	प	प	प	म	म	प	ध	नी	नी	ध	—	प	—
का	—	म	बि	व	स	हु	वे	दा	—	—	न	दे	—	ते	—
प	ध	प	म	ग	रे	स	—	रें	नी	स	—	—	—	स	—
नी	—	च	न	को	—	हो	—	त	उ	दा	—	—	—	र	—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० ३४

बहुत रही बाबुल-घर दुल्हिन, चल, तेरे पी ने बुलाई।
बहुत खेल खेली सखियनसों, अंत करि लरकाई॥
न्हाय-धोय के बस्तर पहिरे, सब ही सिंगार बनाई।
बिदा करन को कुटुम्ब सब आये, सिगरे लोग लुगाई॥
चार कहारन डोली उठाई, संग पुरोहित नाई।
चलै ही बनैगी होत कहा है, नैनन नीर बहाई॥
अन्त बिदा हुवे चलिहै दुल्हिन, काहू की कछु न बसाई।
मौज खुसी सब देखत रह गये, मात पिता औ भाई॥
मोरि कौन संग लगन धरई, धन धन तोरि है खुदाई।
बिन मांगे मेरी मंगनि जो दीन्ही, पर-घर की जो ठहराई॥
अँगुरी पकरि मोरा पहुँचा भी पकरे, कंगना अँगूठी पहराई
नौशा के संग मोहिं कर दीन्हीं, लाज संकोच मिटाई॥
सोना भी दीन्हा रूपा भी दीन्हा, बाबुल दिल-दरियाई।
गहेल गहली डोलति आंगन में, अचानक पकर बैठाई॥
बैठत मलमल कपरे पहनाये, केसर तिलक लगाई।
खुसरो चली ससुरारी सजनी, संग नहीं कोई जाई॥

(खुसरो)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल कहरवा

स्थाई

×				×				×				×			
			स	म	म	म	—	म	—	म	ग	म	म	प	प
			ब	हु	त	र	—	ही	—	बा	—	बु	ल	घ	र
प	प	प	प	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	—	ध॒	नी॒	ध	—	ध	—
दु	ल	हि	न	च	ल	ते	रे	पी	—	ने	बु	ला	—	ई	—
—	—	—	म	म	म	—	—	प	—	ध॒	ध॒	सं	—	सं	सं
—	—	—	व	हु	त	—	—	खे	—	ल	क	री	—	स	खी
नी	ध॒	प	—	प	नी॒	ध॒	प	म	ग	म	ग	रे	—	स	—
य	न	से	—	अं	—	त	क	री	—	ल	र	का	—	ई	—
—	—	—	स												
—	—	—	ब												

भजन नं० ३५

कमलदल-नैनन की उनमानि।
बिसरति नाहि सखी मों मनतें,
मन्द - मन्द मुसुकानि॥
कमलदल-नैनन की उनमानि।

यह दसननि-दुति चपलाहूतें,
महा चपल चमकानि।
वसुधा की बस करी मधुरता
सुधा - पगी बतरानि॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चढ़ी रहै चित उर बिसाल की,
मुकुत-माल थहरानि ।
नृत्य-समय पीताम्बरहू की,
फहरि-फहरि फहरानि ।।
अनुदिन श्री वृन्दावन ब्रजतें,
आवन आवन जानि ।
अब रहीम चिततें न टरति है,
सकल स्याम की बानि ।।

(रहीम)

ताल तीन

स्थाई

×	2	०	3
नी॒	ध ध प प	— म ध॒ प	ग॒ — म म
क	म ल द ल	नैं न — न	की — च न
प — प —	ध ध प प	ग॒ ग॒ ग॒ ग॒	ग॒ — ग॒ —
मा — नि क	म ल द ल	बि स र ति	ना — हीं —
रे रे रे -	रे ग॒ रे स	प — प ग॒	— रे म म
स खी मों —	म न ते —	मं — द मं	— द मु स
प — प नी॒			
का — नि क			

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्तरा

		रें — रें रें	रें — रें —
		य ह द स	न — नी —
रें गुं — रें	सं नी सं सं	सं सं — रें	नी ध प ध
दु ति — चप	ला — हि तं	म हा — च	प ल च स
नी — सं —	नी ध प प	सं सं सं रें	नी — ध प
का — नि —	— — — —	ब सु धा —	की — ब स
म ध प म	गु रें — —	प म ध प	गु — म म
क री भ धु	र ता — —	सु धा — —	गी — ब त
प — प नी	ध ध प प		
रा — नि क	म ल द ल		

भजन नं० ३६

छबि आवन मोहनलाल की।

काछिनी काछे कलित मुरलि कर, पीत पिछौरी साल की ॥

छबि आवन............

बंक तिलक केसर कौ कीनें, दुति मानों बिधु बाल की ॥

छबि आवन............

बिसरत नाहिं सखी मोंमन तें, चितवन नयन रिसाल की ॥

छबि आवन............

(रहीम)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल कहरवा

स्थाई

×				2				०				3			
प	ध॒	प	म	ग॒	रे	स	रे	रे	म	ग॒	रे	स	—	—	—
छ	बि	आ	—	व	न	मो	हन	ला	—	—	ल	की	—	—	—
ग	—	—	ग	ग	—	म	प	ग॒	म	ग॒	रे	स	—	—	—
ला	—	—	ल	की	—	हो	—	ला	—	—	ल	की	—	—	—

अन्तरा

म	—	प	प	नी	—	नी	—	सं	सं	सं	सं	रें	नी	सं	सं
का	—	छ	नी	का	—	छे	—	क	लि	त	मु	र	ली	क	र
रें	—	रें	ग॒ं	रें	—	सं	—	सं	रें	सं	नी	ध	प	—	—
पी	—	त	पि	छो	—	री	—	सा	—	—	ल	की	—	—	—
प	ध॒	प	म	ग॒	रे	स	रे	रे	म	ग॒	रे	स	—	—	—
छ	बि	आ	—	व	न	मो	हन	ला	—	—	ल	की	—	—	—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भजन नं० ३७

ब्रह्म मैं ढूँढयो पुरानन गानन,
बेद-रिचा सुनि चौगुन चायन।
देख्यो सुन्यो कबहूँ न कितै,
वह कैसे सरूप सुभायन॥
टेरत हेरत हारि परयो,
रसखानि बतायो न लोग-लुगायन
देखो, दुरयो वह कुंज-कुटीर में
बैठयो पलोटत राधिका-पायन॥

(रसखानि)

ताल कहरवा

स्थाई

×	×	×	×
स — स स	स -- रे --	रे — ग़ ग़	रे — स स
ब्र — ह्म मैं	ढूँ — ढ यो	पु रा न न	गा -- न न
स — स स	स स रे --	ग़ ग़ रे --	स स -- --
वे द रि चा	सु नीं चौ --	गु न चा --	य न -- --

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्तरा

प	—	प	—	प	प	प	—	म	म	—	ग॒	रे	—	स	—
दे	—	ख्यो	—	सु	नि	यों	—	क	बहूँ	—	न	की	—	ते	—
स	—	स	—	स	—	रे	रे	ग॒	—	रे	रे	रे	—	स	स
व	ह	कै	—	से	—	स्व	—	रू	—	प	सु	भा	—	य	न
स	—	स	स	स	—	रे	—	रे	—	ग॒	ग॒	रे	—	स	स
ब्र	—	ह्म	मैं	ढूँ	—	ढ	यो	पु	रा	न	न	गा	—	न	न

भजन नं० ३८

मानुष हौं तो वही रसखानी,
बसौं ब्रज गोकुल गांवके ग्वारन।
जो पसु हौं तो कहा बसु मेरो,
चरौं नित्त नंदकी धेनु-मंझारन ॥

पाहन हौं तो वही गिरि कौ,
जो धर्‌यो कर छत्र पुरंदर-धारन।
जो खग हौं तो बसेरों करौं मिलि
कालिंदी-कूल-कदम्ब की डारन ॥

(रसखानि)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताल कहरवा

स्थाई

×	×	×	×
स — स स	स — रे —	रे -- ग॒ ग॒	रे — स स
मा — नु ष	हौं — तो —	व — ही र	स — खा नि
स — स स	स स रे —	ग॒ ग॒ रे —	स स — —
ब सौं ब्र ज	गो — कुल	गां व के ग्वा	र न — —

अन्तरा

प — प —	प प प --	म म — ग॒	रे — स —
जो — प सु	हौं — तो --	क हा ब सु	मे — रो —
स -- स —	स — रे रे	ग॒ -- रे रे	रे -- स स
च रौं नि त	न -- न्द की	धे — नु मंझा	र न — —
स -- स स	स — रे —	रे -- ग॒ ग॒	रे -- स स
मा — नु ष	हौं — तो —	व -- ही	स -- खा नि

॥ समाप्त ॥

हर प्रकार की पुस्तकें मंगाने का पता—

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh